धेनु धूरि बेला जब आई। भये विवाह जेहिविधि श्रुति गाई॥
लीला विग्रह ते कर लीला। दोउ कुँवरि की रहिब्रत सीला॥
यह यस भयो जगत के माँहीं। ऐसी लीला भइ कहुँ नाहीं॥
दोउ कुँवरि की करहिं बड़ाई। पर्‍यो सुशोर कहाँ ते आई॥
आह्लादिनी कुँवरि किशोरी। जो कछु होय कहिय सोथोरी॥
तिनकी सखी खजाने वारी। माता जिनकी चन्द्र प्रभारी॥
ऐश्वर्यहु में नाहिन घटी। माधुर्यहु में है दोउ पटी॥
लखि लीला महे दोउ भ्राता।तेहिविधि तिन दोउनकीमाता॥
जो मूरति दोउ रची सयानी। सो पूजा रानी मन मानी॥
चमर छत्र विजनादि बहोरी। भोग राग में प्रीति न थोरी॥
पहिले याज्ञवल्क्य ते पाई। सो पूजा में भई सहाई॥ इति
जब होरी सावन दिन आवे। रानी चन्द्रकलहिं बुलावे॥
गावहु बेटी वीण बजाई। निज मृदंगनी लेहु बोलाई॥
छप्पय—एक समय सिय को शृंगार रनिवासिन्ह कीन्हीं।
नख शिख अनुपम साजि बहुत विधि शोभा दीन्हीं॥
मेवा भरि दई गोद में खेलन की आज्ञा दई।
पुर की कन्या सकल सब तेहियहि समय आय गई॥
गई कुशध्वज महल तहाँ बहुखेल कराहीं।
श्रुति कीरति, माण्डवी संग सो वरणि न जाहीं॥
कुशध्वज की रानि व सुदर्शना देखि लुभानी।
कुँवरिन के ढिग आइ बढ़ावति प्रेम सयानी॥
मेवा अमित प्रकार को सब कुँवरिन के कर दई।

दुलरावा सब बिधि कर्यो परानन्द सुखमय भई ॥
छप्पय--बहुविधि करत दुलार खेल की युक्ति बतावति ।
भौरा चकई आदि खिलौना बहुविधि ल्यावति ॥
हँसति हँसावति बहु प्रकार के, बात चलावति ।
सो सुख रानी लेति जो, नहिं पावति मुनि ध्यावति ॥
अमित प्रकार बिहार करि पुनि निज मन्दिर आवहीं ।
लखि छबि महरानी मुदित सादर गोद बुलावहीं ॥
सकल कुँवरि तहँ संग सिया पुनि गोद सुनैना ।
माथ सूँघि मुख चूमि कहति अति प्रेम सुवैना ॥
हे लाडिलि बड़िबार भई तुम कहां गई रहिं ।
माण्डवी महल बिहार बात सब उरमीला कहिं ॥
माता अति सुख पाइ कै बहुरि वातसल रस भरी ।
अति प्रिय बानी कहति है मन्द विहँसि आनँद करी ॥
हे लाडलि मम प्राण प्राण महराज दुलारी ।
श्रुति कीरति की माय किहाँ कछु खायो प्यारी ॥
सब बहिनिन को अपने कर कछु दई कि नाहीं ।
तुम सन को कस रखत नेह सो कहु मोहि पाहीं ॥
सुनि माता के वैन मृदु, वातल्य रसमूल हैं ।
पिक बैनी बोलति भई सब विधि सब अनुकूल हैं ॥
प्रात होतउठनित सखि गण आवै।सिय दर्शनकरि बहुसुखपावै
खेलति सीय सखिन के संगा। विविध भाँति क्रीडन रतिरंगा॥
खेलन योग अनूपम साजा । जोरि धरी प्रिय भ्रात सुराजा॥

कबहुँ भ्रात लै सिय कहँगोदी।विचरहिं गृह वा‍िका सुमोदी।।
कबहुँक क्रीडन गेंद बतावै। कबहुँक भ्रमरा फेंकि दिखावै ।।
दोहा–मातु पिता की गोद कहुँ, कबहुँ भ्रात की गोंद।
बैठि सिया सुख पावहिं, भोजन करै सुमोद ।।
संस्कार बालापन जेते। विधिवत् भये सिया के तेते ।।
जानि समय श्री तिरहुत राजा।गुरुहिं बोलायो विद्या काजा।।

—: श्री लली जी का विद्या पढ़ना :—

करि वर विनय पूजि गुरुदेवा। करि गणनायक गौरी सेवा ।।
विद्यारम्भ करावउ सीतहिं।उत्सव भयउ सुखद श्रुति गीतहिं।।
सन्यासिनि बनि सरस्वति आईं।करिबे शिक्षा मिस सेवकाई।।
शास्त्र वेद स्मृती पुराना । अलपकाल जान्यो सब ज्ञाना ।।
जासु अंश सुनि विद्या माया । उपजै ज्ञान रूप श्रुति गाया ।।
सोइसिय पढ़ति करन प्रिय लीला।जानहिंयह परमारथशीला।।
दोहा–रूप शील शम-दम-दया, क्षमा-कृपा-गुण-ज्ञान।
रस माधुर सिय हिय बसे, श्री विराग तप दान ।।
कहत परस्पर बचन मृदु, मन मँह परमानन्द।
श्रुति कीरति अरु माण्डवी, आई सुख की कन्द।।
अपर सुता निमि वंश की, सब आईं तेहि काल।
नखशिख छविअति मन हरण,उभ्ऽयोआनन्दमाल
सब बैठी अति प्रेम मन, सिय समीप हरषाय।
महल बहुल छबि मानकी, अद्भुत छबि दरसाय।।
षष्ट, अष्ट, षोडश सकल, कुँअरिन केरे संग।

मन की रुचि लै करत सब, सेवा अतिहिं उमंग ।
कोइ गौर कोइ श्याम हैं, सब हैं विविध सरूप ।
नख-सिख अंग सुदेश हैं, भूषण अमल अनूप ।।

—: श्रृङ्गार सब बहिनों का :—

कोउ के हरित छपाऊ सारी । दरदामिनि मुक्तामनि धारी ।।
कोउ के अरुण चुनरिया राजैं।छवि की खानि मनोहरभ्राजैं।।
कोउ के नील वसन छवि देहीं।मणि मोती कोरिन लगिजेहीं।।
कोउ के पीत मनोहर सारी।जेहिमहँ लगि चहुँओरकिनारी।।
एहिविधिसकलकुँअरितहँसोहै।निजनिजछबिरतिअमितविमोहै

—: लली जू के श्रृंगार :—

सब मिलिसियहिंश्रृङ्गारनलागीं।छबिअद्भुतलखिसबअनुरागी
शीशफूल उर्मिला पेन्हाई । वेणीमुक्ता अमित लगाई ।।
बन्दी कर्णफूल छवि खानी ।श्रुतिकीरति रचि सियमनमानी।।
टीका अमल मणिन मय राजैं।डोरी मोतिन गुहित विराजैं ।।
श्री माण्डवी पेन्हाईनिजकर।करि श्रृङ्गारमुख लखतसुधाकर।।
पाटी सीपज विविध गुहाई । बिन्दा की छबि बरणि न जाई।।
नख-शिख मंजु मनोहरताई। कहिन जाइ अंगन रुचिराई ।।
विहरत महल सकलमन भावति।कबहुँहँसी-हँसितालबजावति।।

—: बाल लीला :—

कबहुँ परस्पर नाच नचावति।कबहुँमधुर स्वर मंगल गावति।।
कबहुँ परस्पर बचन उचारति।कबहुँ मुकुर लै बदन निहारति।।
लखि छबि मगन होइ पुनि जाहीं। मुकुर हाथसेत्यागतिनाहीं।।

प्रतिबिम्बहिं पूँछति तुम को है। इतै कहाँ से आनि बसो है ।।
तुम केहिके कुल की सुकुमारी।नख-सिख मंजु महाछबिभारी।।
को तब तात कवन तब माता।मोसन कहहु सत्य सब बाता ।।
छकिछकिनिजप्रतिबिम्ब भुलानी।तेहि छन आइ सुनैनारानी।।
सिय चेतन भइ मातु निहारी। यह तो है प्रतिबिम्ब हमारी ।।
मैं भूली अपनी परछाईं । यह तो अपर सखी कोउ नाहीं ।।
दोहा–यहविधिअमित बिहार सुख,करति रहति दिनरैन।
जननी लखि प्रमुदितरहति,अतिछविअतिसुखऐन।।

—: बाग बिहार–समाज सहित :—

महली बाग सोहावन जैसी। बरनि न सकत शेष श्रुति तैसी।।
विवध फूल के वृक्ष सोहाई । संतत रहत बसन्त लोभाई ।।
मणिमय आल बालतेहिं राजै।कहुँ मण्डल मनि वेदि विराजै।।
चहुँदिशि फल वृक्षावलि सोहैं। अमित स्वादमय देखत मोहैं ।।
बहु मिलिन्द फूलन रस लै-लै।धावत फिरत कहत सिय जै-जै।।
कहुँ-कहुँ मोर नचति अति सोहै।कीर गान धुनिमुनि मनमोहै।।
सब प्रकार आराम सोहावन । सुखद कुंज सबके मनभावन ।।
गई सिया तँह सहितसमाजा।नखसिख अति छवि राजविराजा
उतकी सखि बहु माल लेआई। सब कुँअरिन कहँदै पहिराई ।।
अमित स्वाद की मेवा लाई । कुँअरिन सकल दिन्हमनभाई।।
खात–खवावतिहँसतिहँसावति। तहँकिसखिलखिबहुसुखपावति
बढ़ि-बढ़ि फूल तोड़ि सब लेहीं । फेंट बाँधि सब शोभा देहीं ।।
होन लगी फूलन की खेला । एक-एक पर हँसि-हँसि मेला ।।

कसकति फूल गेंद के लागे। पुनि हँसि-हँसि मारति अनुरागे॥
दौरि चलतिपगनूपुर बाजति।कहुँछम-छमकहुँ छन-छनछाजति
भिन्न-भिन्न कहुँ लोकति फूला। मुख की श्रीउमंग सुख मूला॥
बहु विधि फूल खेल सबखेलहिं।एक-एक पर झुकिहँसिमेलहिं॥
बहुरि सकल अति आपु समाहीं।चट-पट फूलमारिभगिजाहीं॥
पट-पट उठत लगत जेहिं अंगा। यहि विधि फूल खेलबहुरंगा॥
पुनि तहँ की मालिनी सयानी।भूषण फूल अमित छबि आनी॥
नख-शिख भूषण फूल पेन्हाई।कहि न जाइ शोभा अधिकाई॥
गुच्छा फूल दई सबके कर। मेवा मधुर दीन्ह खोइँछा भर॥
दोहा—चलि आईं माता निकट, सीता सहित समाज।
माता अति प्रमुदित भई, देखि मनोहर साज॥
कही गोद में का है तेरी। देखरावहु जीवनधन मेरी॥
दइ देखाइ मेवा अरु फूला। बोली सिया बचन सुख मूला॥
मैया खाहु मिष्ट यह मेवा। कही स्वाद गुण अरु सब भेवा॥

—: श्री चुरिहारिन लीला :—

पुनि आई चुरिहारिन नारी।देखि सिया सुधि सकल विसारी॥
पुनि धीरज धरि आज्ञा पाई। बैठीं आँगन माहि सोहाई॥
अमित रंग की चूरी लाई। सो सब रानिन कहँ देखलाई॥
हरित पीत शित लाल मनिनके।जरित सोहावनरत्नकनिनके॥
सब चूरी रानी मन भाई। कहि कुँआरिन कहँ देहु पेन्हाई॥
लगी पेन्हावन गावत गीता। मृदु कहि हँसति हँसावतिसीता॥
बहु विचित्र बानी सब बोलहिं।कहि न जाय उर आनँदजेतहिं॥

सब कुँअरी चूरी पहिराई । बोली बचन परम सुखदाई ।।
महाँराज दशरथ जहँ राजैं। तहँ मैं गइऊँ कछुक उपराजै ।।
राजद्वार पै जब मै गयऊं। भीतर खबरि जनावति भयऊँ ।।
कौशिल्या दशरथ की रानी। शोभा शील तेजगुन खानी ।।
तिन मोकहँ लइ तुरत बोलाई। अति आदर समीप बैठाई ।।
देख्यो जाइ कहौं किमि गाई। हे महरानी बुधिन समाई ।।
पूछी कुशल जनक ऋषिराई। रानी सहित कहौं समुझाई ।।
पुनिकुँअरिनि की कँहहुबखानी।अस कहि प्रेम मगनभइरानी।।
सबकी कुशल कहिऊ समुझाई। कुंअरिन की बहुकियेउंवड़ाई।।
तब रानी बोली मृदुबानी। अति सनेह अमृत मय सानी ।।
दोहा–जनकपुरी अरु अवधपुर जात आवत बहु लोग।
उहां इहां वरणन करत कुँअरि कुँअर सम योग ।।
ताते मैं तोहिं पूछऊँ कहहु सकल व्योहार ।
रानीराय कबहुँ करत है इत सनबंध बिचार ।।
इतने में आये सकल रघुकुल के अवसंस ।
चार कुँअर चारो सुघर सब बिधि योग प्रशंस ।।
सकल कुँअर मन हरत हैं सब सुखमा के रूप ।
युगल गौर युग श्याम हैं परमानन्द स्वरूप ।।
वरणि न जाइ मनोहर ताई। अंग अंग बहु काम लजाई ।।
उनकी प्रीति परस्पर पावन।कहि न जाइ मनभाव सोहावन।।
जसइत कुँअरि मनोहर राजे। तस उत कुंअर महा छविछाजे।।
सब प्रकार सुंदर दुहुँ ओरा। अति प्रसन्न लखि मानसमोरा।।

तब मैं कहेउँ सुनहु महरानी। दोउ राजा सुकृती के खानी॥
दोउ रानी सुकृती के ऐना। असनहिं सुनेउँ न देखेउँ नयना॥
जो अभिलाख करहु मनमाहीं। शिव प्रसाद कछु दुर्लभनाहीं॥
जाइ कहेउँ सब इतकी बाता।करब सोई जेहि लागिहिनाता॥
सब रानिन कहँ चूरि पेन्हाई। अमित द्रव्यमणि भूषण पाई॥
चारि दिवस भइ इहँवो आये। सुनतहि रानी के मन भाये॥
अमित द्रब्य दै चूरि पिन्हाई। सो समाज सुख वरणिनजाई॥
दोहा—गई कुसध्वज के महल, वरणत सिया सनेह।
परमानंद मगन मन, पुलकपल्लवित देह॥

—: पटविन लीला :

सकलकुँअरि माता ढिब सोहैं।वरणे छवि अस मतिकविकोहैं॥
ताहि समय शंकर मन आई। गयेबहुत दिन दरशन पाई॥
नारा चोटी बहुरि सवाँरी।जेहि महँ लगि मणि मोतिनधारी॥
गुच्छाबिबिध मणिन की लागी।जेहिं नयन बस सो बड़ भागी॥
ककही अमित प्रकार बनाई। मणि मुक्तामय विशद सोहाई॥
विविध मणिन मय भँवरा गोली। चकडोरी रचना अनमोली॥
डिबिया अमित प्रकार बनाई। सकल रंगमय मणिन जराई॥
सबसंभारी उमासँग लीन्हे। अपनोवेष नारि कर कीन्हे॥
दोहा—द्वारपाल ते बूझिकै, मंदिर कीन्ह प्रवेश।
महल बहुल छबि मानको, निरखत मगन महेश॥
बहुरि सुनयनहिं सीतहि देखेउ। अपनो बड़ो भाग तब लेखेउ॥
रानि सुनयना की रुख पाई। बैठी आंगन मन हरषाई॥

कुँअरिन सकल विलोकत नीके । पूरे सकल कामना जी के ।।
रानी निकट बोलाई आई । सब डिबिअन को खोलि देखाई ।।
सकल कुँवरि देखति चहुँओरी । निरखत प्रेम प्रमोदनथोरी ।।
पूछी रानि प्रेमयुत बानी । कहहु सुंदरी मोल बखानी ।।
बोली उमा मनहि हरषाई । जो कछु देहु सो तुमहिं बड़ाई ।।
शिव कहि राजन के गृह माहीं। कबहुँ मोल मैं कीन्हेऊँनाहीं।।
रानी सकल होत बड़दानी । तुम तो अति उदार महरानी ।।
पुनि बड़ भागिनि कुँअरिन पाई।करिको सकै तव भागबड़ाई।।
तुम समान तुमहीं महरानी।अस कहि शिथिल भईशिवबानी।।
प्रेम नेम जब रानी पाई । कनक द्रव्य मणि अमित मँगाई ।।
ताहि देइ बहु आदर कीन्हा।अहो भाग कहि शिवसबलीन्हा।।
कछु मेवा सिय निजकर दयऊ। सादर हर्षि उमाशिव लयऊ ।।
मृदुल भाखि तब चलीं सयानी। प्रेम प्रमोद न जात बखानी ।।
बरनत पंथ सिया इतिहासा । उमा शंभु पहुँचे कैलासा ।।
दो०–माता सब कहँ बाटि दइ, कछु राखी निज हेतु ।
कछु निज सहचरि कहँ दई, राखन हेतु निकेतु ।।

(कमला जी मे बसंत उत्सव–नौका विहार)

सब गोतनिन मिलि श्री महरानी।गइ कमलातट शोभाखानी।।
कुँअरिन सकल संग सब लीन्हे।नखशिख मनिशृंगारवरकीन्हें
कमला पुलिन भई अति भीरा । राज दुन्दुभी बजत गँभीरा।।
अपर विविध बाजे सब बाजैं। कमलापुलिन महा छबि छाजैं।।
ध्वज पताक तोरन तहँ छाई। कहिन जाइ अद्भुत रुचिराई ।।

अमितनाव मणिजड़ित सोहावन।अतिपावन मुनिचित्तचोरावन
तेहि पर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहीं।दुहूँ कूल नरनारि सोहाहीं ॥
घाट दोऊ दिशि मनिमय नाना।अति विचित्र नहिंजाइबखाना।
सब मन भावति करि अस्नाना।विप्रन कहँ दीन्हों वहुदाना ॥
पहिरे सकल बसंती चीरा । युगल कूल कमला अति भीरा ॥
नावन चढ़ि कमलाजल माहीं।फिरत सकलछवि वरनिनजाहीं
देवन सुमन बृष्टि झरिलाई । पुर के लोग अबीर उड़ाई ॥
कमला जल भयो अरुन सोहावन।फूल बहत तामें अतिपावन॥
अवरख झकझकात जल माहीं।अति शोभा भइ वरनि न जाहीं॥
दोहा-सब रानी अरु कुँअरि सब, एक नाव महँ सोह ।
निज स्वरूप छवि विमलता, कोटिन रतिहि विमोह ॥
महरानिन की नाव संग, पुर युवतिन की नाव ।
पीत चीर सबके लसें, भूषन मनिन जराव ॥
लसत अलौकिक सुन्दरताई । कहि न जाइ मनही मन भाई ॥
कुँअरिन की छवि कौन बखानै । रही संग तेई सब जानै ॥
पीत चीर मनि कोरन लागी । सब पहिरे नखशिख छविपागी॥
कमला जीव निकरि सब आये।मच्छ कच्छ जल जन्तु सोहाये ॥

(कमला जी में बसन्त उत्सव बहार)

तिनकी शोभा अमित अपारा। लाल पीत सित बहु आकारा ॥
ते सब कौतुक विविध कराहीं । कबहुँ प्रगट कबहुँ जल जाहीं॥
कबहुँ उछरि जल दौरत फिरहीं। कबहुँ एक एकन पर गिरहीं॥
कबहुँ भिन्न बहु खेल कराहीं। जलचर की छबि वरनि न जाहीं॥

तिन कहँ देखि कँअरि सब हर्षहिं। क्षन क्षन देव सुमन बहु बर्षहिं।
मोदक अमित प्रकार मिठाई। जलचर कहँ सब देत खवाई ॥
सिय निजकर बहु मोदक देहीं। हर्षित लरहिं मोद मन लेहीं ॥
बहु मेवा मोदक जल डारी। प्रमुदित लूटि लेहिं जल चारी ॥
जल चर कहँ फूलन ते मारहिं। हँसहिं परस्पर बचन उचारहिं ॥
मैया लखिकै मोद मगन हैं। धन्य धरी सोइ धन्य लगन हैं ॥
उड़त अबीर परस्पर हरषत। स्रग सुगन्ध नभ ते सुर बरसत ॥
बीनादिक सब यन्त्र बजावहिं। मधुर मनोहर मंगल गावहिं ॥
सब नावन पर नृत्य सोहाई। यन्त्रगान धुनि अति छबि छाई ॥
जौन नाव सनमुख जेहिं आवैं। मारि पीचका सकल हरावैं ॥
खेलहिं नावन नाव मिलाई। चलत पीचका अति सुघराई ॥
दोहा-करि श्रृंगार नख सिख बिमल, पीत वसन रचि अंग।
दान विविध विधि देइकै, सब चले अतिहि उमंग ॥
कमला कूल महल बहु सोहै। एक एक अतिशय मन मोहै ॥
सब रानी सब कुँअरि सहीता। कमला पुलिन महल गइसीता ॥
रानि राय सब कुँअरि सहीता। निज महलन आये प्रमुदीता ॥
महल आइ बहु रंगन खेलहिं। एक एक पर हँसि हँसि मेलहिं ॥
सकल कुँअरि सखि संग बनाई। खेलत पिचका मनि अँगनाई ॥
चलत कुमकुमा रंग परस्पर। पीत बसन भइ अरुन मनोहर ॥
पुर कुँअरी सब तेहि क्षन आई। कहि न जाइ नखशिख मधुराई ॥
सब कुँअरिन कर पिचका सोहै। पीत वसन सबके मन मोहै ॥
बड़ी भीर भइ जनक महल में। अमित किंकरी खड़ीं टहल में ॥

कोइ पिचकारी भरि भरि देहीं। सिय सादर सखियन ते लेहीं॥
बढ़ी खेल बहु आपस माहीं। अति शोभा भइ वरनि न जाई॥
रानी राय खड़े सब देखैं। जीवन जन्म सुफल करि लेखैं॥
चलति कुंअरि पग नूपुर बाजहिं। सातो स्वर रागिनी लजावहिं॥
छन छन सुर बर्षावहिं फूला। भई महल मुद मंगल मूला॥
दोहा-अति उत्सव अति सुख भई, जनक महल के माहिं।
शारद शेष महेश विधि, वरनत ताहि लजाहिं॥

(अथ कौतुकागार लीला)

कौतुक भवन में देखहीं, अति कौतुक तहँ होय।
अति सुन्दर बाजे बजहिं, नृत्य करहिं सब कोय॥
कलधर बहु संदूक लखत तेहि मंदिर माहीं।
कल फेरे तें अमित खेल सुख के प्रगटाहीं॥
प्रथमें पेंच एक फिरी सप्त स्वर बाजन लागी।
श्रवनामृत सो भई सकल कुँअरी अनुरागी॥
दुतिय पेंच जब फिरि गई जंत्र अमित बाजन लगी।
अनहद शब्द सुनात हैं सबके मनमें सुख जगी॥
सिय मन भइ अभिलाष गान की कुँअरिन जानी।
नेहकली कछु गाय उठीं सुन्दर सुख दानी॥
सबके मन में नृत्य भाव आई सुखदाई।
लगी करन सब नृत्य मंडली बाँधि सोहाई॥
नृत्यगान बहु होत परस्पर कुंअरि कुंअरि के।
सकल रानि चलि आइ तहाँ देखे मनहर के॥

तब माता दृढ़ करि दई लगींनटन अति प्रीति सों।
दोउकल सहचरि फेरितबजंत्र बजावहिं रीतिसों ।।
फिरी तीसरी पेंच सकल संदूक समानी।
तब भोजन हित विविध भाँति विनतीकरि रानी।।

(श्रीलली जू का गान विद्या सीखना)

दो०–चौथ मधुरता में कहब, सप्तम वर्ष बिहार।
सीखी बहु विद्या ललित, अति सुख रस को सार।।
सकल गुनिन की नारिं को, पठइ बोलि महरानि।
कुँअरिन कहँ सौंपति भई,कहि प्रिय मधुर सुबानि।।
गायक की नारी चतुर, आईं गान प्रवीन।
प्रथम पहर स्वर ताल को,सिखवति है अतिलीन।।
बहुरि यंत्र वीनादि को, सिखवति कहि वर वैन।
रागरागिनी भेद सब, कहति कुँअरि मन चैन।।
नृत्य भेद सिखलावहीं, नूपुर मधुर बजाइ।
प्रथम पहर श्री जनक के, महल बहुत छविछाइ।।
पुनि रानी सिखलावहीं, ताल को भेद अपार।
पुर युवती सब आवहीं, सोउ सिखावन हार।।
दो०-सब के मन अस रहतहैं, सिखहिं कुंअरि सब गान।
ताते शिघ्र अनुभव भई, लेत अनूठी तान।।
एक दिवस महरानि मन, आई अस अभिलाष।
मम कुँअरी जस गावहीं,तस कसकोइ सकैनभाष।।
परि परि चोइया की तबहि, आवहिं सब पुरनारि।

जिनके गान की थाप है, जिनके ताल विचारि ।।
तिन समाज में कुँवरि सब, गावहिं जंत्र बजाइ ।
अरु उन सबके समुझ में, अदभुत रस सरसाइ ।।
तबहिं हमारो बोध है, कुँअरिन सीखेउ गान ।
सोइ कीन्ही आईं सकल, जिन्ह के गान प्रमान ।।
दुतिय महल के ऊपर में, है एक महल विशाल ।
तँह समाज सबकी भई, उपज्यो आनँद माल ।।
सब कुँअरी यक ठौर भईं, यंत्र अनेक मिलाइ ।
लगीं गान करने सकल, अद्भुत तान जनाइ ।।
भई मोहनी गान सो, सब कोइ गईं बिकाइ ।
कुँअरिन की प्रिय गान को, कोइ गावें नहिं पाइ ।।
सब समाज पुनि उठि गई, माता भईं अनंद ।
अमित निछावरि दीन्ह तब, गुनिन बोलि सानंद ।।
जोगायक की नारि सब, कुँअरि सिखाइनि गान ।
तिनकी अति सनमान भई, पाई कोटिन दान ।।

(श्री कमला स्नान सब बहिनों सहित)

माता तें अभिलाष निज, कही सुअवसर पाय ।
महरानी झूलन महल, दीन्हीं तुरित देखाय ।।
रानी आज्ञा पाइ कै, रची हिंडोल विचित्र ।
सो छवि वरनत नहिं बनत, सुख प्रति परमपवित्र ।।
सतानन्द माता हंकराई । आये पत्रा लिये सोहाई ।।
सिय झूलन दिन पूछी रानी । सतानन्द तब कहेउ बखानी ।।

सुनिये महरानी असि बाता। झूलन रीति सवन विख्याता ।।
सावन मास अनूप कहावै । तामहँ नारि झूलि सुख पावै ।।
तिनमहँ युगल भेद अस आहीं। सुनहुँ रानि मैं वरनौं ताहीं ।।
नैहर में झूलैं सुकुमारी । तिन कहं तीज कृष्ण सुखकारी ।।
पति के भवन जो झूलन चाहैं। शुक्ल तीज को बेद कहा है ।।
काल्हि तीज सुंदर सुखदाई। प्रथमहिं पहर लगन भल याई ।।
सुमिर शंभु गिरिजा गनराई । कुँअरी चढ़हिं हिंडोल सोहाई।।
प्रथम वाम पग धरि अहलादा। झूलहिं कुँअरि न पायविषादा।।
दो०—माता निज कर तें सकल, कुँअरिन को शृंगार ।
कीन्ही अति शोभा भई, बहु बिधि करत दुलार ।।
भोजन कछुक कराइकै, पान अतर पुनि दीन्ह ।
नखशिखछविमनहरनअति, जेहिलखिरतिअतिकीन्ह
शुभ मुहूर्त्त आयो जबै, कुंअरि चढ़ाइ हिंडोल ।
रानि झुलावहिं मुदित मन, प्रेम प्रमोद न थोर ।।

(ललीजू का झूला उत्सव)

एक दिवस सीता अलदेली । बहिनिन संग अनेक सहेली ।।
सब मिलि कमला करि स्नाना। कीन्ह शृंसारनजाय बखाना।।
नख शिख मधुर मनोहर रूपा। मनि भूषन छवि अमलअनूपा।।
सब समाज माता ढिग आई । जननि चूमि मुख कंठ लगाई ।।
लखि छबि मातहिं मोद न थोरी।पुनिपुनि चितव सियाकीओरी
सब कुँअरिन कहँ बहुरि दुलारी । बारबार हर्षित महतारी।।
तेहि क्षन जनकराय तहँ आये। कुँअरी देखि अमित सुखपाये।।

(श्री ललीजू का शृंगार)

एक समय सब जनक दुलारी । करि शृंगार बैठीं सुकुमारी ।।
मनि भूषन नख शिख अतिसोहे। देखत रूप कोटिरति मोहे ।।
वीरी ते मुख भरी सोहावन।मुख की द्युति रवि शशीलजावन।।
नयन कमल महँ अंजन भ्राजै । भृकुटी कुटिल मनोहर राजै।।
अधर अरुन बेसरि छबि छाई।कहि न जाइ दसनन रुचिराई।।
सीस फूल मोतिन मय वेनी । कर्णफूल बंदी छबि श्रेनी ।।
मंदस्मित मुख वरनि न जाई । बोलति मधुर परस्पर भाई।।
षष्ट अष्ट सब राज दुलारी।छवि समुद्र सिय कीअति प्यारी।।
सब चारिउ दिसि सेवाकरहीं।लखि छवि सियाप्रेमउरभरहीं।।
अतसिपुष्प द्युतिकोइमनहारी।चन्द्रबदनिकोइअतिछविकारी।।
कनकवरनकोइछजत सोहावनि।कोइ तड़ितकीद्युतिहिलजावनि
कोइ तन गंध मालती ऐसो। कोइ गुलाब जस महँकति तैसो।।
दो०—कोइ कमल कोइ मल्लिका, गंधवती सुखरूप ।
कोइ पाटल चंपा अमल, सौरभ अतिहि अनूप ।।

(श्री ब्रह्मा जी का पिचकारी बेचन के बहाने आना)

सकल परस्पर आनंद करहीं। बोलनि हँसनि प्रेममन भरहीं ।।
ताहि समय ब्रह्मा मनमाहीं।भइ अभिलाष वरनि किमिजाहीं।।
सिय देखन हित कियो बिचारा । प्रेम मगन भे बारंबारा ।।
चलिध जनकपुर सीतहि देखन।लोचन सुफल करौं उमंगेमन।।
अमित पीचिका मनिन जराई। कलधर विविधप्रकार बनाई।।
जाहिंनिरखिमुनिचित्त लोभाहीं।मधुरअमितछबिबरनिनजाहीं

नारि रूप धरि पुरमहँ गयऊ। महल द्वार पर शोभितभयख।।
सब सन कहेउ कि पिचिकालायउँ।लेहु मोल मोहिंदेहुजोभायेउँ
द्वारपाल किंकरी बोलाई। तेहि सन भीतर खबरि पठाई ।।
बैठीं रानि सुनयना जहवाँ। दासी बात जनाई तहवाँ ।।
मन में समुझि सुनयना रानी। होरी समय आइ नियरानी ।।
पंद्रह दिन तो माघ अब गयऊ। पँचये दिन बसंत पुनिभयेऊ।।
लेउ सकल कुंअरिन के हीता। दाम लगे सुदेहुँ मैं तेता ।।
पूँछि कवन लाई पिचकारी। कहेउ खड़ी द्वारे बहु नारी ।।
नारी जानि बोलाई रानी। आइ महल महँ सब सुख खानी।।
बैठी दौरा धरि अँगनाई। कहा कहौं छबि वरनि न जाई ।।

दो०-देखि सुनैना पूछेऊ, तुम कहवाँ की नारि।
कहा तुम्हारो नाम है, बोलहु बचन बिचारि ।।
नाम हमारो सिल्पिनीं, बसों अवध के राज।
अमित खेलौना रचति हौं, लेत जाहि के काज ।।

देखनि सब रनिवास मँगाई। अति विचित्र शोभा अधिकाई ।।
कुँअरिनिकँह पुनि लीन्ह बोलाई।अतिसनेहमय सकलदेखाई।।
भइ सब चकित देखि अतिशोभा।सबकेमन पिचकारिनलोभा
कोकिल कंठ मधुर वर वयनी। उर्मिला मुखचंद सुनयनी ।।
बोली अति सनेह मृदुबानी। परम प्रेम की घन उमड़ानी ।।
मैआ कीन देहु पिचकारी। मो कँह लगति बहुत यह प्यारी ।।
सिय कहि जल भरि लेहु चलाई। का जाने पाछे न छुटाई ।।
आँगन में यक हौज सोहावन।तेहि मग कमला जलशुचिआवन
दीन्हि फेरि कल जल भरिआई।अतिसुगंधमय विमलसोहाई।।

चतुर्दिशा सब कुंअरि खड़ीहैं। नख शिख मनि ते अंगजड़ी हैं।।
भरत पीचिका चलत परस्पर। को छवि कह सुषमा दूनाधर।।
लखिलखि ब्रह्मा सहित समाजा। भये विदेह प्रेम उर भ्राजा।।
भइ रनिवास मगन लखिशोभा।जनु चकोर पूरन शशिलोभा।।
यकयक पिचिका सब कुँअरिनकर।लसतजरावनिजरितमनोहर
दो०-अति अनंद कुँअरी सकल, देखि पीचिका होत।
माता देखति चन्द मुख, छन छन प्रेम नि सोत।।
तब रानी बोली मृदुबानी। सनहु सिल्पिनी सुमति सयानी।।
जितनी पिचकारी तुम लाई। सबकी दाम कहो समुझाई।।
सिल्पिनी बोली सुनु महरानी। कवन दाम मैं कहौं बखानी।।
कुँअरिनिसहित चरन तब देखेऊँ।मैंनिजजन्म सुफलकरिलेखेउँ
अबतोहिं भाव सो दे महरानी।असकहि सिथिल भईमनवानी।।
ताकर प्रेम देखि सिय माता। अति आनन्द समात न गाता।।
अमित द्रव्य मनि भूषन दीन्हा।अति सन्मान ताहिकरकीन्हा।।
मैं संतुष्ट भई तब भावन। देखेउँ चरन सरोज सोहावन।।
कुँअरिन दरस भली मैं पाई। कहि न जाय तब भाग बड़ाई।।
जैसी अवधपुरी अति सोहै। रचना देखि मुनिन मन मोहै।।
तैसी भ्राजति पुरी तुम्हारी। रचना बिविध मदन मन हारी।।
जस सुकृती कौशिल्या रानी। तस तुम भ्राजति हौ महरानी।।
दो०-उहाँ राम भ्रातन सहित, राजत परम अनूप।
इत सीता बहिनिन सहित, सुखमा की सब रूप।।
इक अभिलाष मोर मन आवै। जो विधि अस संयोग घटावै।।

इत दुलहिनि उत दुलहा नीके ।नखशिख सुभगभावतीजीके ।।
इतै गौर उत श्याम सोहावन। मेरे मन दोऊ मन भावन ।।
कहिहौं जाइ इतै की वाता। सुमिरत नेह समात न गाता ।।
सब रनिवास मगनभइ तेहिक्षन। सुनिसुनि बात होति प्रमुदित मन
चंद्रहार निज ग्रीव उतारी। सिलिपनि ग्रींव दीन्ह तब डारी ।।
पाइ प्रसाद चली प्रनाम करि। कुँअरिन रूप मनोहर उर धरि।।
छनछन मगन चले मगमाहीं। अधिक सनेह बरनि किमि जाहीं।।

पिचकारो लीला

दोहा–पुनि आईं निमि वंस की, सुता सकल गुन ऐन।
सिया संग ठाढ़ी भईं, बोलति मधुरी वैन ।।

तिन सब कहँ रनिवास बोलाई। वदन चूमि गोदन बैठाई ।।
माथ सूँघि बहु आदर कीन्ही। यक यक पिचिका सबकर दीन्ही।।
पाइ सकल कुँबरी सुख पाई। पल पल हर्ष न हृदय समाई ।।
गई हौज पर छोड़न लागी। छूटत देखि बहुत अनुरागी ।।
मैया सकल बोलाइ बहोरी। भोजन के हित बिबिध निहोरी ।।
मेवा बिबिध प्रकार मँगाई। सादर कुंअरिन सकल खवाई ।।
अमित भाँति पुनि मातु दुलारति।राई लौन छनहिं छन वारति।।
कबहुँ सीय मुख चंदहि हेरति। कबहुँ बनज बदनी कहि टेरति।।
कबहुँ सुधारति बेसरि मोती। बढ़त छनहि छन प्रेम निसोती ।।
सबके अरुन चूँदरी राजैं। मुक्ता गुहित सुमांग विराजैं ।।
शीश फूल सबके सिर सोहे। चिबुकन नील बिंदु मन मोहे ।।

दो०–छल्ला मुँदरी अंगुरिन, अति शोभा को ऐन।
कंकन वाजूवंद छवि, मोपै कहत वनैन ।।

।। मुरली लीला लली जू की ।।

नख शिख मंजु मनोहरताई । कहि न जाइ रंगन रुचि राई ।।
बिहरति महलसकलमन भावति। कबहूँ हँसिहँसिताल बजावति
कबहुँ परस्पर नाच नचावति । कबहुं मधुर स्वर मंगल गावति।
शची इन्द्र की अति प्रिय नारी । सावित्री ब्रह्मा की प्यारी ।।
पार्वती शंकर मन हरनी । इन सब की छबि जाइ न बरनी ।।
अपर देव नारिन संग लीने । नख शिख मनि शृंगार सबकीन्ने।
अमित बाँसुरी मनिन जड़ाई । परम विमल छबि मान बनाई ।।
जनक महल हर्षित सब आईं । करि उच्चार मैं मुरली लाई ।।

दोहा—निरखि रानि प्रमुदित भईं, बैठन आज्ञा दीन्ह ।
गइ समीप देखन लगीं, मुरली मन हर लीन्ह ।।
सकल कुँअरि मिलि बैठही, मुरली छबि की ऐन ।
माता सन बोली सिया, अति प्रिय मधुरे वैन ।।

मइया मोकहँ देउ कि नाई । यह मुरली मेरे मन भाई ।।
सब मुरली के दाम चुकाई । दीन्ह रानि मन हर्ष बढ़ाई ।।
पाइ निछावर सब हरषानी। कुँअरिन की छवि लखि सुखमानी
सिय निज कर प्रसादकछु दीन्हा।सबसुरनारि हर्षिउठि लीन्हा।
निज निज धाम गईं सुरनारी । हृदय राखि सब जनकदुलारी।।
तब रानी सब कुँवरिन के कर । दीन्ही मुरली मधुर मनोहर ।।
जब सब कुँअरी मुरलि बजाई । सातो स्वर मन्दिर भरछाई ।।
अति आनन्द भई सब माता । परमानंद समातन गाता ।।
सुदर्शना कुसध्वज रानी । कहति सुनयना सन मृदु वानी ।।

मुरली परम मनोहर आई। श्रवन सुखद सब कुंअरि बजाई।।
श्रीपरमा माधुर्य विहारिनि। सब निमि वंश सुता मनहारिनि।
सब मिलि मैया के ढिग आई। देखि मातु आनन्द बढ़ाई ।।
सब कुँअरिन कर मुरलीराजैं। नख निख अद्‌भुत कांति विराजैं
मैया कहेउ बजावहु प्यारी। बैठहु मम ढिग सकल कुमारी ।।
आज्ञा पाय जाय हरषानी। बैठीं सब समीप सुख मानी ।।
अलबेलिन की प्रीति मनोहर। बचन अगोचर राजित सोहर।।
दोहा–सब मिलि मुरली अधर धरि, गावति मधुर रसाल।
महली सब प्रमुदित भईं उमड़यो आनंद माल ।।

श्रीलक्ष्मी निधि चारों भाइयों का विवाह

दोहा–दक्षिण दिशा विडालका, नाम पुरी विख्यात।
श्रीधर महराजा बसैं, अति बल नीति सुहात ।।
श्री सुकान्ति महरानि हैं, पतिब्रता गुन खानि।
कान्तीधर श्रीयशोधर, जुग सुत प्रिय मुद बानि।।
चारि सुता तिनकी भईं, सिद्धी वानी नन्दा।
ऊषा ये चारो सुघर, अति शुशील सुख कंदा ।।
एक समय श्रीधर महराजा। जनक लली दर्शन के काजा ।।
श्री मिथिलापुर आय पधारे। भूमि सुता पद हिय में धारे ।।
हे सीते सीते हे सीते। मधुर मधुर बोलत अति प्रीते ।।
अति आदर कीन्हो महिपाला। कुशल छेम पूँछी तेहि काला।।
जो अभिलाष हिये मे राखी। सो सब पूर्ण भई कछु भाषी ।।
श्रीमिथिलेश जनक महराज।।सब स्वीकार कीन्ह भलआजा।।

श्रीधर आये निज रजधानी। समाचार सुनि मुद महरानी ।।
तुरत बोलाये कुल उपरोहित।पूजन करि बहु विधि हियहरषित
दोहा—कहेउ भूप मिथिलेश के, देखेउँ राजकुमार।
पुत्रिन सन संबंध करि, अति सौभाग्य हमार ।।
शुभ तिथि शोधनकरि महराजा।मिथिला जाहुहियेधरिकाजा।।
तिथि विवाह की शोधन करिकै। चले पत्रिका भूप सँ लइकै।।
श्रीसुत शीघ्र चले हरषाई । पहुँचे जनक पुरी में आई ।।
दीन्ह पत्रिका भूपति लयऊ । सुनत सभासद हर्षित भयऊ ।।
माधव मास सु शुक्ल पंचमी । चन्द्रवार दिन लगन उत्तमी ।।
श्री ललो जु के दर्शन पाई । तुरतहिं देह दशा विसराई ।।
यहि बिधि जीवन लाभ सुपाई । आये निज पुर करत बड़ाई।।
श्रीमिथिलेश आदि महराजा । करन लगे विवाह कर साजा।।

श्री दुलहा शृंगार

दोहा--मातहिं दूलह बेष को, सजन लगीं अति प्यार।
कुँवर लक्ष्मी निधि आदिक सुघर, रूप गुनन आगार ।।
कंचुक राहदार जरतारी। टकी सुरतनन रुचिर किनारी ।।
स्वर्ण तंत मय रचन दुकूला । पहिने वस्त्र स्वर्णमय फूला ।।
पनरथ कलित सीप भव वृंदन । लसे उपानह पदजगबंदन ।।
सर्वा भरन रतन मय राजैं । लखत वनत नखशिखतिनकाजैं।।
अंजन आँजि नयन महँ दीन्हा। तिलक चारु मस्तकरचिकीन्हा।।
नख सिख दूलह वेष बनाई। बाँधि मौरि तिन अति सुखपाई ।।
अनुपम दूलह बेष सुहायो। कोटि काम कमनीय लजायो ।।

रतन जटित पालकि सजवाई । शुभ मुहूर्त तिन्ह पर बैठाई ॥
दोहा--देखि मातु प्रमुदित भईं, नयनन को फल लीन ।
करहिं आरती सकल मिलि, दान विविधि विधि दीन ॥

श्रीपिताजी का शृङ्गार

उतभूपतिहिं बसन पहिरायो । पीत रंग जरिदार सुहायो ॥
पोखराज उरहार पिन्हायो । सब भूषन मनि मय सजवायो ॥
मनियन तार क्रीट अति सुन्दर । जेहिलखि लज्जित होईपुरन्दर
राज शृंगार साजि सब राजा । सेवक हर्षित जय महराजा ॥
पीत पुष्प माला पहिराई । सुन्दर रसपुत बीरि पवाई ॥
मिथिलापति हरषित हिय आये । कहि न जाय वह समयसुहाये
साजि बरात बंधु युत राजा । चले मनाइ गनेशहिं भ्राजा ॥
बजी दुदुभी दिग धुनि छाई । सिमिरि चली सुन्दर कटकाई ॥
आगे बढे दुरद ध्वजधारी । ध्वज मृग हय गज अति छविकारी।
वीच बीच करि वास सुहाये । मिथिला पति पहुँचे हर्षाये ॥
अति स्वागत सबविधितिन्ह कीन्हा। ऋतुसुखप्रदजनवासादीन्हा।
तिथी पंचमी सब सुख खानी । माधव मास शुक्ल शुभ जानी॥
समाचार जनवासहिं पाये । अति आदर मंडप महँ आये ॥
लोक वेद विधि कुल गुरु करहीं । पूजि गनेश यशावलि कहहीं।
कन्या दान नृपतिवर करहीं ।लखि लखि परिजनसुखअनुभवहीं
श्रीधर बोले अति मृदुबानी । श्रीलक्ष्मी निधि प्रिय सुखमानी।।
सिद्धि सुता मैं करउँ प्रदाना । ग्रहन कीजिये हिय हुलसाना॥
वानी नाम सुता शुभ खानी । गुन आकर दीन्हो मुद मानी ॥

दोहा--श्रीनिधि को नन्दा दयउ, उषा निधानक जान ।
प्रीति सहित श्रीधर कियउ, सकल सु कन्यादान ।।
सकल भाँवरी फेरि के, सिंदुर की विधि कीन ।
दाइज भूरि समर्पि के, कियो विनय होइ दीन ।।

धरम धीर यसोधर आये, उत्तम धान सुण महँ लाये।
सो सिध्या लक्ष्मी निधी देकर,करन लागि भाँवर प्रमोदभर।।
थिर कराय आरतिन उतारी, चलि लिवाय मण्डपहिसारी ।।
नृप जुवतिन आरती कीनी, अमित निछावर मैं धन दीनी ।।
सकल भाँवरी फेरि के, सेंदुर की विधि कीन ।
दाइज भूरि समपि के, कियो विनय होइ दीन ।।

गान करत परिछनकहँ आवही।निरखिनयनभरि हृदयजुड़ावहि
दुल्लह दुलहिनी को कोहवर लबाई गई,
नारी कल गान कारी जंत्र बहु बाजई ।
सुषमा सरूप बर दुलही अनूप देषि,
मदन अनेक औ अनेक रति लाजई ।।
कोहबर अनेक रीति रानी कराई तहाँ,
अद्भुत अनूप शोभा महल विराजई ।
चारो सुत पिता पास आये अनुराग भरे,
गोद मोद लीन्हे राजा महा छबि छाई ।।

जेवनार

पावन अनेक भाँति बैठे हैं बराती सब,
व्यंजन अमित नाम कहत न आई है ।

मधुर स्वरगान गारी देतीं सुजान सर्व
श्रवन दियो राजा सुनत अति भाई है ॥
धोये मुख पान पाय जनवासे राव आय
याचक लुटाई सो विरदावलि गाई है।
मनि गन अनेक चीर हय गजराज आदि
अति अहलाद नृप याचक दिवाई है ॥
बहु वर धेनु राजा जनक अलंकृत कै,
विप्रन बोलाई दान दीन्हो हरषाई के !
बेदन की ऋचा भाषि दीन्हो अशीष सकल,
हर्षे सर्व बिप्र छिप्र राजा भाव पाइ के ॥
लक्ष्मी निधि महल जा विदा भये मोद मन,
दुलही समेत चले सुख वरषाइ के।
रानि सब सुता को सनेह बश बार बार,
मिलें मिल गावें पुनि मिलें धाइ धाइ के ॥
पालकी चढ़ाई गौरी गनपति मनाई,
सो फिरी रनिवास करुन विरह अति छायो है।
बहु मनि भूषन बसन गज बाजि आदि,
दाइज अनेक भाँति राव ढिग आये हैं ॥
दीन्हों सब याचक बोलाइ मन हर्ष राजा,
सुयश अपार तहाँ छायो मन भाये हैं।
धौंसा बजाई घहराइ जिमि पावस सघन,
चले हैं बराती लोग शंकर मनाये हैं ॥

सवैया-नृप राज चले दल साजि सबे,पहुँचावनहेतुसबेपुरआये।
कछु दूर गये पुनि फेरेउ राय, बुझाये सवे परमानन्द पाये ॥
गाँव समीप जब आइ बरात, सुसोहत चहुँदिशि मंगल छाये।
रनिवास इतै पुरनारिन कों, परिछावन हेतु बोलाय पठाये ॥
इत सीता आदि सबै कुँवरी, अति हर्ष भरी सजिआरतिलाई।
कीन्हे श्रृंगार अनेक विधी, सब प्रेमनिधी सुषमा तत छाई ॥
दासी दास सब आवत जात, भई अति भीर महा सुखदाई।
नृप मंदिर में तेहि अवसर को,सुख जाइनहींकहिबुद्धिलजाई॥
जब द्वार समीप बरात भई,परिछावन की छबि सुन्दर राजें।
गान अपार भई सुखसार, अनेक प्रकार की बाजन बाजें ॥
रनिवास छबी निधि देखि बधू,कहँजाहिंविलोकिरतीसतलाजें।
परमानंद मिटी दुख द्वन्द, चली गति मन्द समेत समाजें ॥
दोहा-सुत सुत बधू निहारती, चलीं सुनयना आदि।
मनि मन्दिर कोहबर जहाँ, जाहिं निरखि सब बादि ॥
मनी सिंहासन युगल कहँ, पधराई अति नेह।
लोक रीति जननी करति, बरषत आनन्द मोह ॥
कुँवरि कुँवर सकुचात हैं, लौकिक करत सनेम।
पुनि जननी रुख पाइके, करत बढ़त अति प्रेम ॥
सीता आदिक कुँवरि सब, नेग आपनो पाइ।
मुदित भई को कहि सके, वह सुख वरनि न जाइ ॥
जनक राय सब कहँ बहुरि, आदर विनय जनाय।
बिदा कियो भूषन बसन, बिबिध भाँति पहिराय ॥

सबकी सब सनमान करि, जाचक लिये बोलाय ।
विरदावलि भाषत सकल, राय जनक ढिग आय ।।
अमित वसन मनि बाजि गज, दइ रुचि सबहिं निहारि।
सकल अशीषत घर गये, करि बहु भाँति जोहारि ।।

।। श्री नारद आगमन हस्त रेखा ।।

एकबार नारद मुनि आये । चरित पुनीत राम के गाये ।।
मातु सुनैना पूजन करिकै । सियहिं परायो चरनन परिकै ।।
दोहा--सीस नाय सिय मातु पुनि, विनय कीन्ह करजोरि ।
ललो हस्त फल रेख प्रभु, कहहु सुनन रुचि मोरि ।।
नारद सिय महिमा अनुमानी । कीन्ह प्रनाम मनहिं सुखसानी ।
सेवा जान हाथ लखि बोले । सकल सुलक्षण चिन्ह अमोले ।।
जसवर मिलै सियहि मन भावत । सुमहु सुनैना रेख बतावत।।
शासन करै सबहिं पर जोई । सद्‌गुन सदन स्वस्थ मन होई ।।
पूरन काम एक रसवीरा । समरजितै नहिं मिलि रनधीरा ।।
आतम बसी धृतमान अनूपम । ललित लगत लावण्य विरूपम्।।
नीति प्रीति परमारथ वेता । बुद्धिमान मृदु बोल सुचेता ।।
अंग अंग शुभ उच्च सुखाकर । बाहु अजानु प्रताप दिवाकर
पीन सुवक्ष नयन अभिरामा । खंज कंज सम सोह ललामा ।।
अमित मार मद मर्दन हारा । शोभा धाम नित्य सुखकारा ।।
श्रीयश ज्ञान विरति भण्डारा । वीर्य तेज वल योग अपारा ।।
शशि सम सब कहँ नित प्रिय लागैं।देखत तापत्रिविधभयभागैं।।
दोहा-केश सुचिक्कन जानु पुनि, मांसल सुभग अनूप ।
आपने रूप उदारता, मोहइ सकल सरूप ।।

शाठा चन्द्र सुन्याय ते, तुमहिं जनावन हेत ।
उपलक्षण गुण मैं कहेउँ लेहि हिये निज चेत ॥
पूजित सब तिरलोक को, परहित निरत कुमार ।
निश्चय सीतहिं वर मिलै, वचनन मृषा हमार ॥

जो जो वर गुन कहा बखानी । दशरथ पुत्र माहिं सोरानी॥
रामहिं वर जो देय विधाता। सिया भाग बढ़ जाय सुभाता॥
औरहुँ एक कहहुँ मैं बाता । सुनहिं मातु जस मोहिं लखाता॥
गिरिजाबाग मध्य जेहिंदेखी। सिय मनरम करिप्रेमविशेषी॥
सो वर मिलै विगत सन्देहा।धरहु बचन मम हियशुचिगेहा॥
असकहिबिधिलोकहिं मुनिगयऊ। आगिलचरितसुनहुजसभयऊ

(श्री किशोरी जी का विरह)

दो०–सकुचिसिया मनही मनहिंसुमिरत निशिदिनराम।
कबहुं लहै एकान्त जब, प्रगट विरह हिय धाम ॥

सात्विक भाव चिन्ह दर्शावैं । पिया विरह की बात रुवावैं ॥
लाजदवावति जियकर भावा।कोउ न जानजिय प्रेमप्रभावा॥
एक दिवस सिय बैठि विवित्का। राम प्रेममय रँगी सुरक्ता ॥
चन्द्रकला लै सखिन समाजा । गई तहाँ सिय दर्शन काजा ॥
सियहिं प्रनामि पुनि बैठि सकासा।दशादेखि सबभईंउदासा॥
बोलीं स्वामिनि छमब हमारी।अविनय यथा बाल महतारी॥
राउर दशा देखि हम बाला। सहजहिं होत कृशी तब पाला॥
येन केन विधि ढोवहिं देहा । केवल स्वामिनि सेव सनेहा ॥

दो०–कारन कवन दयालुनी, रहहु अशान्त अधीर ।

विरह चिन्ह सोलखि परै, हमहिं बतावैं वीर ।।
बोलीं सिय मन रहस छिपाई। मैं निरोग मन स्वस्थ सुहाई।।
सहज स्वभाव भयो अस मेरो। कारन मोहि परै नहिं हेरो ।।
चन्द्रकला सुनि बचन जानकी । गूढ़ रहस रस भरे खानकी ।।
सिया मनहिं लखि गई महीनी। परम चतुर बहुकलाप्रवीनी।।
प्रान समान सीय प्रिय आली।सिय मुख मलिन नदेखनवाली।।
मनहींमन अस कीन्ह बिचारा। सिय सुख लहैं सुधर्म हमारा।।
दो०-प्रगट लली नहिं कछु कहहिं, कारन होन अधीर।
तदपि ताड़ हिय बात मैं, करहुँ उपाय अपीर ।।
हौंहु जनावहुँनाहि सोसीतहिं। क्रीड़ा मिस सुख देहुँअभीतहिं
करिनिश्चयबोलीकरजोरी।सुनहिं सिया मिथिलेशकिशोरी।।
बालहिं ते तब कृपा महारानी।मोपै रही सखिन सहसानी।।
खेलब खाब पढ़ब सँग भयऊ।दरसन प्यास सदाबसकियऊ।।
नृत्यगान कल कला नाटकी। योग सिद्धि सबगुन सुठाटकी।।
कृपा तुम्हारि सकल हम पाई। सेवाहित तब सो निपुनाई।।
सेवाकरहिं सखिन मिलि साथा। होहिं सबहितबसुखीसनाथा
(श्रीसरकार को प्रगट करने के लिये श्रीचन्द्रकलाजू की रास रचना)
कहहु हृदयअभिलाष भामिनी।सुनहिं कृपाकरमोरस्वामिनी।।
दो०-नृत्य गान रस रहस वर, नाट्य कला सुखरूप ।
तब निकुञ्ज एकान्त महँ, सहचरि करैं अनूप ।।
सुभग सिंहासन आप पधारैं । सेवा समय लखें सुख सारैं ।।
सुनि बोलीं मिथिलेश लड़ैती।करहु सखी शुभ आसवड़ैती।।

चेष्टा मोर सुनहिं सब सखियाँ।तुम्हरेहेतु आननहिंअखियाँ।।
सखिगन कहिजय जनककुमारी।परीपदहिंभलभाव सम्हारी।।
चन्द्रकला शुभ आयसुधरिकै।सखि सबसाज सजीमुदभरिकै।।
रत्न निकुञ्ज बैठि शुभ सीता।नखतबीच जनु चन्द्रपुनीता।।
सखिगन पूजि आरती कीन्हीं ।वीड़ा गंध माल पुनिदीन्हीं।।
पानि जोरि शशि कलाप्रवीनी। बोलीमधुर बचनरसभीनी।।
दो०-स्वामिनि हम सबहीं सुनी, कथा रमायन केरि ।
मातुपिता अरु संत मुख,ऋषि मुख कैयक बेरि ।।
परम धाम साकेतविहारी। दिव्य दिव्य कर चरित उदारी।।
सह परिकर जिमि दिव्य निकुंजे।रचहु सोअभिनयसुखपुंजे।।
पानिफेरि वर बुद्धि बखानी।स्वीकृति दीन्हसिया सुखदानी।।
चितवति चहुँदिशिसखियन ओरी।खोजतमनहुँरामरसबोरी
होन लगी लीला सुखदाई । नाट्य पात्र सब सखी सुहाई ।।
भाँतिभाँतिके चरित सुखाकर।ललितलसत जनुसत्यसत्यवर।।
रासकुञ्ज शुभसमय सुहावन। रास केलि होती मन भावन।।
नृत्यगान गतिप्रेम सुहाये । वीना वेनु सुखद रव छाये ।।
तदाकार बनि प्रेम समाधी । भई मगन सब मिटीं उपाधी।।
दो०-अन्त:करन विलीन भे, सखियाँ भईं विभोर ।
प्रेम दशा अति उच्चतम, सहित सिया रसबोर।।
भये प्रेम बस ब्रह्म विशाला । प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला ।।
अवित प्रकाश निकुँजहिं छावा।कोटि सूर्य जनु उये सुहावा।।
कोटि काम मद मर्दन वारे। सौख्य सिन्धु सौन्दर्य सम्हारे ।।

श्वाम सरोजसुभगसुखकारी। श्यामलबदनपरसि सखिसारी।।
दिव्य सिंहासन पुति पधराई।पूजि यथा विधि हिय हर्षाई।।
गन्धमाल दिवि बीड़ा दीनी । करि आरती प्रनाम सुकीनी।।
सियहिंनिरखि प्रभुप्रेम विभोरे।भये मगनछविसिन्धुहिलोरे।।
प्रभुहिंदेखि सिय भईसुखारी।निज निधि पाइमनहुतनधारी।।
बोले प्रभु शशिकलहिं सुहाती।पूर्वभई निज धाम जो बाती।।
हम अरु सीता नहि द्वैजानहु।छिनहु वियोग होयनहिंमानहु।।
लीला हेतु वियोग लखाई। सोउ मिटहिं कछु वासर जाई।।
जोहमसो सत अवध मँझारा।विहरहिं तित्य संग परिवारा।।
दो०-कछु दिन बीते आइहैं, मिथिला गलिन मँझारि ।
परिणय लीला होयगी, संग सिया सुकुमारि ।।
जनक लड़ैती जानतीं, यद्यपि यह सब बात ।
तदपि उच्चतम प्रेम सों, विरह हृदय दुखदात ।।
जौन वेष हम मिथिला ऐहैं।लखहु प्रिया मोहि चीन्हे पैहैं ।।
सो स्वरूप द्रुत राम दुरावा । राजकुँअर नर रूप दिखावा ।।
कोटिमनोज लजावन हारा।धनुष बान निज करहिंसम्हारा।।
सिंहध्वनि गति कति सबसोही।निरखिद्रबहिंमन जायसमोही
अमित अलौकिक सुन्दरताई। कहिन जाय मनहींमन भाई।।
देखि रूप सब भई विभोरी।को हम कहाँ बिसरि सब गोरी।।
भो चित चेत कछुक छनमाहीं । देखें तहाँ नराम लखाहीं।।
मन अधीर विरहाकुल सीता। हृदय राखि प्रभु रूप पुनीता।।
लाज सकुच बसधरि उरधीरा।बोली सखि सन बचन गँभीरा।।

नृत्य गान रस क्रीड़ा काला। भूलि गईं सब तनमन वाला॥

दो०—स्वप्न लखीं हम सुनहु सखि, परम पुरुष नर रूप।
दरस देय कछु बात कहि, दुरिगो दृश्य अनूप॥

आनँद धाम स्वप्न जो देखी। अबहुँ हृदय महँ हर्ष विशेषी॥
हमहुँ तुमहि सब कही सुहावा। लखीस्वप्न सुखकरसुखछावा॥
करि विस्तार कहहिं अरु सुनहीं। सीय सहितमनआनँदसनहीं
बोली सिय असस्वप्न महाना। कहे सुने नशि जात दिखाना॥
काहू सन जनि कहियो ऐरी। गोप बात रखु नित्त हियेरी॥
सर्वहिंबुझाय मातु ढ़िगआईं। सखियाँ निजनिजसदनसिधाईं॥
माता सियहिं गोद बैठारीं। चूमि बदन बहु प्यार सम्हारी॥
भोजनमधुर स्वकरहिं करायो। रतनपलँग पुनिसियहिंसुवायो

दो०—यहिप्रकार सिय सुरतिशुभ, दिनदिनबढ़तिअथोर।
मिलिहैं कब रघुवंश मनि, सोचति हृदयविभोर॥
निमिष निमिष माधुर्य्यकी, बुद्धि राममय होत।
जो देखत तिहि नयनमें, छिनछिन नव ऊद्योत॥

छप्पय—जनक नन्दनी विकल रामगुनसुनि नारदमुख।
पुलक अंग जल नयनप्रेम में पायउ अति सुख॥
देखन को अभिलाष बहत मन में होइ आई।
पर कुछ सिद्ध उपाय दरस को नाहिन पाई॥
ताते भयेउ उदास मन, खानपान विसरी सकल।
देखि सियकीविकलता, सबकुँवरिन केमन विकल॥
चन्द्रकला एकान्त पाय सिय सों बतरानी।

क्यों है तब चित उदास, मोहि कहहु सु वानी ।।
मनभायो तवकरब हर्ष, मन में जेहि आई ।
पर मो कहँ मन को, बिचार सबकहहु बुझाई ।।
पिक बैनी बोलत भई, अवध राजसुत प्रान मम ।
इन नयनन दरसाबहू, तव तोहि पर प्रसन्न हम ।।
उधरि प्रीति को धरु, दवाइ टुम धीरज आनो ।
अवसि मिलिहि कौशलकुमार, यह निश्चयजानो ।।

(सुको श्री अवध भेजना)

शुकी एक जेहि सिय पढ़ाइ अरु परम पियारी ।
ताहि अवधपुर जान हेतु शुभ मंत्र बिचारी ।।
लिखी पत्रिका प्रेमकी अभिप्राय रस में भरी ।
जोपढ़ते श्रीरघुलाल चित, इतआवन उत्सवकरी ।।

शुगी पत्र लेकर अयोध्याजी शीघ्र आना

घनाक्षरी :—

रतन मनि धाम जहाँ राम लोचनाभिराम,
राजत सखन संग अति छबि छाई है ।
सरयू पुलिन ओर बैठे रसि केन्द्र मनि,
मोहनि शृंगार किये अति हर्षाई है ।।
शुकी तहँ जाय के उचारे हैं मधुर बैन,
अर्थ आवरन कोई जान नहिं पाई है ।
उठे रघुलाल बानी सुनि के निहाल,
भये गये तमाल तरे मोद मन छाई है ।।

शुकी ने गिराई प्रेम पत्रिका सुपाई,
लाल बांचत नेह छाई रोग-रोम पुलकाई है ।
फूल रसगारी तृण लेखनी बनाई प्यारे,
लिखी प्रेम पावन सु आवन जनाई है ।।
उड़ी शुकी पत्र लेकै पहुँची जनक धाम,
सिया को सुनाई बैन बोल मधुराई है ।
बैठीनृप लाड़िलीजी चन्द्रमणि कान्तधाम,
बानी अभिराम सोई सुनत उठिधाई है ।।
दो०–पिय के पाती पाय के, मुदित भई सुकुमारि ।
नयनन उर सब लावती, पाये हर्ष अपारि ।।
जस उतमन अभिलाष है, तस इत मनअभिलाष ।
प्रियालिखत बहुबनत नहीं, बात एक मेंह लाष ।।
जस सनेह तुम्हरे हृदय, तस इत प्रेम अपार ।
प्रेम लिखत नहिं बनत है, मिलन आनन्तअपार ।।
उतमग निरखिरही शुगिपाती । चहै चातकीजिमिजल स्वाती।।
तेति क्षण शुगि कीन्ह परनामु । कहि जैजै सियपति पियराम।
खोलि पत्र सुखवरणि नजाई । लौट प्राणजिम पुनि तनुपाई ।।
प्रिय पत्र कर लै सखि सोई । बाँचत दृग जल चीरभिगोई ।
दो०–प्राण प्रिया हम हे, प्रिया परम प्रेम तुम माहि ।
जेहिविधि तुम्हरीप्रीति है, तेहिविधि हमरीआहि ।।
दिनदिन देह व्यथा बढ़ै, जनु लागि कछु विविधाई ।
भेद सखा पूंछत सबै, भाषौ कछुक बनाई ।।

प्रेमिन रूचिपुरवौं सदा, प्रेमि हृदय बसाऊँ।
प्रेमिन ते विलगौं नहीं, प्रेमिन करहिं बिक जाऊँ॥
आवत बिश्वामित्रसंग, सकल धरहु मन धीर।
धनुषशंभु तोरोंसपदि, हरहुँ विरह की पीर॥

दम्पत्ति का लली जू के विवाह हेतु चरचा चलाना)

एक दिवस प्रिय मातु सुनैना। बोली जनक पांय परि बैना॥
सुनहुनाथममविनयकृपाकरि। यथा होयेरुचिकरहिंसीउरधरि॥
अहैं विवाह योग सुकुमारी। सबविधिजानहिंकरहिं विचारी॥
पितृधर्म शास्त्रन मँह भनई। सुता विवाह समय सो करई॥
जनक कहेउभलकहीपियारी। सीताहिं लखिमोरेहु रुचिभारी॥
निशिदिनकरहिंसुसोचविचारा।केहिंविधिकरहिंसुव्याहसंभारा॥
दो०—सीतहिं लायक वर प्रिये, दशरथ नन्दन राम।
गुरुसुवात अति रहस की, प्रथम सुनायो भास॥
नृप दशरथ अरूहम प्रिय दोई। एकहिं बंश प्रथम के होई॥
यद्यपि बीत गई बहु पीढ़ी। गोत्रहु बदल गयो निज सीढ़ी॥
तदपिप्रीतिनिजकुलहिंसमाना। खाबपियब व्यवहार सुहाना॥
तनिक भेद नहिंजाय लखाया। दोनहु बंश एक कर भाया॥
केहिबिधि वातचलावहुँतहवां। बनै न कहत सकुच है जहवा॥
चलत वतकही बीचहिं सीता। आईं सखि सह भाव विनीता॥

(धनुष पूजन लली जू का जाना वहिनि न सहित)

दो०—एक दिवस कोइ काज में, महरानी अरूज्ञानि।
सीतासन प्रमुदित कही, अतिप्रिय मधुरसुवानि॥

परिचर्य्या पिनाक की आजू । तुमहिं करहुसब साजहु साजू ॥
सियामुदित मन आयुसु पाई । नेह प्रेम लै चलि हर्षाई ॥
जहँ शिवधनुष तहाँसियगयऊ । निजकर फूल बुहारत भयऊ ॥
कछुक फूलधनु संधिहिंअटकी । रहितेहिलखि सीतामनभटकी॥
मन महँ करि विचार ठहराई । वाम हस्त ते धनुष उठाई ॥
चन्द्रकला सिय आज्ञा कीन्ही । चंदन सेत रक्त धसि दीन्ही ॥
मनिकोपर में धरि हर्षाई । अतिसुगंध अतिविमलसोहाई॥
उरमीला माला कुसुमन की । गूंथिदई सो भइ सियमनकी ॥
कोपर संपुट मनि न जराई । सकल पारषदजल अन्हवाई ॥
जलझारी कमला जल धरेऊ । पूजा सौज सकल तहँ करेऊ ॥
सबकरि बहुरिमातु ढिग आई । सब कीन्ही सो दई जनाई ॥
पूजन हेतु जनक तहँ गयऊ । देखि धनुष मन चिंता भयऊ॥
रानी कहँ पुनि लीन्ह बोलाई । पूँछी अति सनेह समुझाई ॥
आजु कवन परिचर्य्या कीन्हा । धनुषटेढ़ सन्मुख करि दीन्हा॥
रानी बोली राज दुलारी । सियाकीन्ह ममरुचिहि विचारी॥
सीता कहँ पुनि नृप हँकराई । मातु मधुर कहि लीन्ह बोलाई॥
पूछी सब वृतान्त जनाई । राजा मनमहँ अति सुख पाई ॥
बहुरिबिचारकीन्ह मनमाहीं । सीता कुँअरि वली अति आहीं ॥
सियमहिमामन कीन्हबिचारी। रानि सुन यनहि कहे हँकारी ॥
सहजहिसियशिव चापउठावा। शक्ति अचिन्त्य यथामुनिगावा॥
मुदितमनकहि सामुहे कीन्हीं । हर्षित भूप गोद तब लीन्हीं ॥
उरलगाइ अतिसहित हुलासा। महाराज अस बचन प्रकासा ॥

हे सीते तुम लिन्ह उठायी कैसे । धनुगरुता मंदर चल जैसे ।।
कमल नाल ते अति सुकुमारी। मुरकि न कहूँ वाँहि तुम्हारी।।
चम्पकलिनसमचितइअँगुरिया। चूमतपितुसियसुधरगुदलिया।।
दै संतोष सुनैना पाहीं । बोल बचन अनुकूल सुहाहीं ।।
ललिहि योग वर मिलै अनूपा।करउँ विवाह सुखद अनुकूला।।
कवित्त–सोचत विदेह वैदेही के विवाह हेतु,
'नारायण' रच्यो मन चिंता चित ढोने में।
ठनि गो पिनाक प्रण ऐसो कठिन जाको,
पूरण करैया ना दिखात काहू कोने में।
सर्व शुभ लक्षण सम्पन्न सुकुमारी सिया,
शंकर सहाय होंय पूर्ण प्रण होने में।
तुल्य कुल शील वयवृत बल वैभव मैं,
मिले जो जमाई तो सुगन्ध होय सोने में।

श्रीशंकरजी-जनकजी ध्यान से सब बात कहना।

आजु नेम धरि शिव कहँ ध्याऊँ।शासन देहितथा चितलाऊँ ।।
अस कहि नृप शिव मंदिर जाई।ध्यानमगन तनसुधिविसराई।।

ध्यान में धनुष भंग के लिए प्रतिज्ञा।

जानि मनोरथ शिव वरदानी।ध्यानहिं मँह सब कहाबखानी।।
दो०-चाप मोर तब गृह धरो, पूजहु जेहि करि नेम ।
तासु भंग शुभ यज्ञ करि, पइहौ योग सछेम ।।
अस प्रण करहु सुनहु नरपाला।जो यह तोड़े धनुष विशाला ।।
सीता व्याहताहि सन होई । कहुँरु त्रिसल्य ज्ञान सब कोई ।।

यहि विधि ब्रह्म राम परमारथ । दैहैं दर्शन कहौं यथारथ ॥
इष्ट देव नृपसों प्रभु मेरो । भंजि चाप सिय वरै सुबेरो ॥
सुख यस पइहौ विशद महाना।राम पाइ कहु रहै न पाना ॥
शासनकरि शिव रूप दुरायो।जनक जागि निज शीशचढ़ायो॥
गयउ भवन सब बात बतायउ।सुनत सुनैना सुठि सुखपायउ ॥

सभा में विवाह की चर्चा चलाना

एक दिवस नृप सभा मँझारा। बात कहीसिय ब्याह सम्हारा॥
शम्भु चाप जिमिसीय उठावा।प्रण कीन्हेउँ तिमिआपुबतावा॥
दो०-गुरु सन कहेउ सुपाँव परि, जस प्रभु आयसु होय ।
सोइ करहुँ नहिं आन कछु,कहहुँ मृषा नहिं होय ॥
सुनि नृप गिरा विनय रस सानी। साधु साधु बोले मुनिज्ञानी॥
कीन्हेउभल प्रण सुनहु भुआरा।पुजिहैं मन अभिलाषतुम्हारा॥
रंग भूमि सजवाय सुहावन । तामँह वेदि मध्य जगपावन ॥
तहाँ धराय समुद शिव चापा। सबहिं जनावहु जो प्रण थापा॥
दर्शक बास राज सत कारहि।यथा उचित बहु बेग सम्हारहिं॥
ऋषि थल बाहर नगर बनाई। स्वागत साज धरौ सजवाई ॥
दीपदीप सब नृपन सकाशा । तब प्रण हौवै तुरत प्रकाशा ॥
ऋषिन मुनिन कहँ न्यौत बुलावहुँ।विप्र साधु सस्मानिजिवावहु
दो०—चार बरण आश्रम चतुर, नारी लघुजन कोय ।
प्राणि मात्र सतकार करू, छिद्र तनिक नहिं होय ॥
मंगल हेतु लली बैदेही । दान मान प्रिय बचन सनेही ॥
पूजहिं सबहिं यथा श्रुति सारा।ईश जानि जग सकलभुआरा॥

मंगल द्रव्य मँगाय अथोरी। नगर सजावहु चारहु ओरी ॥
महा मोद मंगल पुर छावै। ताकी समता कतहुँ न आवै ॥
गुरू शासन लहि तिरहुत राऊ।चरन परेउ अति प्रेमहिछाऊ।।
आज्ञा सिर सबनाथ तुम्हारी। अस कहि भवहि गयोसिधारी ॥
आयसु दियो यथामुनि नाथा। तसतसकियो अधिकनृपमाथा ॥

(ऋषियों और राजावों को सूचना)

देशदेशनिज प्रणहिं जनायो। सकल ऋषिननृप बोलिपठायो ॥
दो०–विश्वामित्र मुनीशवर, आश्रम करत सुयज्ञ।
मंत्रि पठायो विप्रयुत, तहँ नृप बर-बर बिज्ञ ॥
देश देश के भूपति आये। सिया बरन बहु बेष बनाये ॥
अति सत्यकार भूप सनपाये। असन सयन सब भाँति सुहाये ॥
चहूँ दिशि आईपरजनटोली। सबसबबिधि सुखलहा अमोली ॥
सबन्ह बाससव भाँतिसुहाये। रहहि सुखी निजनिजमन भाये ॥
दो०–प्राची दिशा पुर के लसै धनु यज्ञभूमि सोहावनी।
कंचनमनिन मयधाम चहुँदिशि अति सोहावनिपावनी।।
द्वार चारहुँ के उपरि शुभ ध्वज पताक विराजहीं।
जेहिराह आवतलोग सब दिशि अति सुहावनिभ्राजहीं।।
वेदि चहुँ दिशि मंच शोभित त्रियावरन छबि मोहहीं।
लागीमहामनि जनु अनेकन ज्योंति शशि रवि लाजहीं।।

श्री शंकर जी विश्वामित्र को स्वप्न देना

करहिंजोग जप जहँ सुत गाधी।करत असुर तहँ विविधउपाधी।।
तब अकुलाइ ध्यान मुनि ठाना।भा अवतार राम का जाना ॥

गाधि तनयपहँ गे शशि भाला।स्वप्न दीन्ह तहँ दीनदयाला॥
ब्याज राम रघुबर कहँ लेई।मिथिला जाहु अमित सुख भेई॥
शक्ति बिना रसिकेश्वर आधे। पूरण होंहि योग युग साधे॥
करिहहिंचरित किशोरिकिशोरहिं।सब्र जहानकोआनंदबोरहिं॥
दो०-कौशिक मुनी प्रबुद्ध ह्वै, शिव अनुशासन मान।
शिष्यन कहेउ सनेह सों, सुनहु सकल मतिमान॥
मख राखन हित अवध हम, जावहिं नृपति समीप।
राम लषन इत लाइ युग, दइहैं निसचर लीप॥

श्री दशरथ जी सब पुरजन को बुला के विवाह की चर्चा चलाना

छन्द-यहविधि निरखि कुमारन को तहँ मन मोदितनरनाहू॥
तब तुरन्त बोल्वो सुमन्त को ल्यावो वशिष्ठ बोलाई।
सुहृद सचिव पुर प्रजा वृद्धजन दीजै सभा लगाई॥
कछु भाषन की अभिलाषा उर उपजी अवशि हमारे।
करिहौं गुरु शासन सिर धारे जो सम्मत हो तिहारे॥
सुनत सुमन्त तुरन्त चले तब ल्याये गुरुहिं लेवाई।
सचिव सुहृद परिजन पुरजन सब आये सुनत रजाई॥
वृद्धवृद्ध सिगरे रघुवंशिन सुजन पूज्य मतिमाना।
आये सभा मध्य सब बैठे करत बिचार बिधाना॥
बंधु पुरोहित सचिव परीजन प्रभु मुख रहे निहारी।
कहि न सकत पूछत बिन कोई भै समाज तहँ भारी॥
सब कहँ देखि भूप मणि बोले सुनहु सकल मम बैना।
भये कुमार विवाहन लायक उचित भेल अब है ना॥

ईश कृपा भे कुँवर चारि मम तुम्हरे पुण्य प्रभाऊ ।
अस बिचार अब करत मोर मन करहुँ विवाहउ राऊ।।
जो तुम्हार सबको सम्मत अस होइ हिये हुलसायो ।
तो जेहि जहँ जस परे योग लखि बनतो अबहिं सुनायो।।
निज अभिलाष सुनत सिगर जन बोलि उठे इकबारा।
राम व्याह अब करहु भूप मणि दूसर कछु न विचारा।।
सबको सम्मत सबको यह सुख सबहीं अस अभिलाषी।
राम ब्याह अब लखब नयन इन सत्य कहैं शिव शाषी।।
बाँधे मौर चारि भ्रातन को कब देखन दिन होई ।
अस आनँद महँ जेहि सम्मत नहिं ताते मंद न कोई ।।
सुनहु भूमि भूषण हत दूषन कह वशिष्ठ मुसुकाई ।
जो प्रभु दियो पुत्र तुमको सोइ दैहैं जोग लगाई ।।

कबित्त

जोरि गुरु ज्ञाति मन्त्रिमण्डल विचारैंराउ,
भये चारों लाल वय तरुण किशोर हैं ।
सुन्दर सुशील सर्व सद्गुण सम्पन्न ,
हंस वंश अवतंश सुख धाम श्याम गौर हैं ।
वधू अनुरूप चारों लाल लगि मिलै कहाँ,
उर अभिलाष अस उठत हिलोर हैं ।
"नारायण" पूजे मन कामना हमारी यदि,
करैं गुरूदेव नैकु नैन कृपा कोर हैं ।

श्री विश्वामित्र जी का आगमन

दो०-बहु बिधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं वार।
करि मज्जन सरजू जल, गये भूप दरबार ॥
छन्द-इतने ही में द्वारपाल ह्वै, आतुर आयो धाई।
करि बन्दन ते अजनन्दन को, दीन्हो बचन सुनाई ॥
महाराज महिपती मुकुट मनि, जासु महामुनि ख्याती।
सोई विश्वामित्र इत आये, आये विनहिं जमाती ॥
दशरथ सुनिकर सहितसमाजा।चरणशीशधरि ह्वैकृतकाजा॥
षोडस पूजि सुआसन आनी। सेवा कीन्ह सहित सुत नारी ॥
रामहिं देखि नयन भरि बारी।प्रेममगन मुनि सुरतिबिसारी॥
कौशिक हिय नहि दूसर भावा। रामहिं जानेउ ब्रह्म सुहावा॥

श्री चक्रवर्ती जी बचन

—: सवैया :—

ऐसी कृपा नहि कीनी कभूँ, जस आयके पायँलखायके आजू।
सो कहिये "रसरंगमणी",अब आपको आगम भोकेहिकाजू॥
जाहिर है जहँ लगि धनधाम, सु और धरा सब राज समाजू।
लेहु सोई जो लगै तुमको, मन मानेसु मोद महामुनि राजू ॥

श्री विश्वामित्र बचन

—: कवित्त :—

असुर समूह अति नितहिं सतावत हैं,
लषन समेत राम जू को मोहिं दीजिये।
धर्म को सुजस नृप लीजिये जहान बीच,

मोह मूढ़ता की बात रंचहुँ न कीजिये ।।
मंगल कुशल अति ह्वैहैं इन दोउन को,
साँचि ही कहत मोरी बात को पतीजिये।
निशिचर नाश ते सनाथ हम ह्वै नाथ,
हूजिये प्रसन्न अति भय में न भीजिये ।।

श्री दशरथ जी बचन

साठि सहस्र बर्स बीते लह्यो राम जी को,
जिन बिन छिनहूँ रहैं न मेरो प्रान है ।
अबहीं ये षोठस बरश से है कमती मुनि,
कहँ सुन्द उपसुन्द पुत्र महाबलवान हैं ।।
दोउ दुर्धष भट मन्त्री राज रावन के,
जिन्हैं देखि भागत फिरत देवता महान हैं ।
कैसे तिन्हैं मारिहैं ये सुन्दर किशोर मध्य,
कैसे पुत्र देऊँ मुनीश सिद्ध के निधान हैं ।।

—: सवैया :—

हे ऋषिराज सुजान न कान, सुनाइये राम वियोग के बैना ।
घोर कठोर सुरारिन संग, कहाँ लरिका सुकुमार लरैना ।।
मागहु धेनु धरा धन माथ सो हाथ पसारि के देउँ सचैना ।
हैं मम प्राण समान सबै सुत, पै 'रसरामहिं' देत बनैना ।।

श्री वशिष्ठ जी बचन

मागे बरदान आप ब्रह्म ब्रह्मानन्द जू सों,
होन हित पुत्र पुत्रवधू स्वरूप सों ।

अंशन सहित ब्रह्म भये हैं तिहारे पुत्र,
ब्रह्मानन्द शीरध्वज तनया के रूप सों ॥
पूरन होन चाहत ब्रह्म कौशिक की कृपा,
युगल सिंगार सुख पाइहौ अनूप सो।
सोई सुख हेतु मुनि मख रखवारी मिस,
आये हैं सलाह करि मिथिला के भूपसों॥

राजन जो हमहूँ तुमहूँ मिलिकै अबहीं जो बिचारि रहे जू।
सो सुभ ब्याह कुमारन को करवावन कौशिक चाह रहे जू॥
मागत हैं मष के मिस रामहिं, हर्षहिं देहु सु मंत्र कहे जू।
जाचक गाधि तनय 'रसरंग,मणी' मुख हाथ पसारि रहे जू॥

दोहा-अति सुख युत अइहैं भवन, इनके काज सँवारि।
हरष सहित दीजै तनय, कहा रहे मद मारि॥

-: कवित्त :-

दीजै हुलसाय संशय प्रमाद त्यागि,
कौशिक संग राम लक्ष्मण जा रहे हैं।
मेरे कला विद्या में पारांगत भये अब ते,
इनसे बला अतिबला विद्या पुनि पइ हैं॥
भूष नाहिं प्यास नाहिं कबहूँ उदास नहीं,
दिन दिन प्रकाश तन तेज अधिकाइ हैं।
'नारायण' युगल जाय अइहैं चतुर ह्वै कै,
चारो यदि जाइहैं तो आठ ह्वैके आइहैं॥

दो०-गुरु के बचन प्रतीति करि, प्रेम सहित नरनाँह ।
राम लषन सौंपे तुरत, मन उत्साह अथाह ।।
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ।।

-: सवैया :-

लेइ शुभ आयसु जननि सों लषन राम,
मारिकै खलन को मुनि मष कीजिये ।
हाथ तुम दोउनके मीच निस चारिनकी,
याते यारजयसु पै हर्ष अति कीजिये ।।
कोही अति कौशिक निहालइन्हैंकींजैलाल,
आइ पितु मातु को बहुरि सुख दीजिये ।
होइ मग मंगल सुकीरति बिजै विभूति,
फलै मन कामना अशीष मम लीजिये ।।
दो०-विजय मन्त्र पढ़ि सहित विधि अभिमंत्रित करिअंग।
मंगल लागे पढ़न पुनि, गुरु वशिष्ठ दुःख भंग ।।

श्री माता जी से विदा मागना।

दो०-मख राखन के हेतु हम, पितु आयसु ते जात ।
आयसु आशिष दीजिये, बेगहिं आउब मातु ।।
छन्द-द्विज कारज लगि छत्रिन को तनु,गाधि सुवन सेवकाई।
गुरु अनुमति पुनि पितु निदेश शिर,तामें मोर भलाई ।।
छत्री कुल महँ जन्म विप्र दुख कानन सुनि नहिं जाते ।
सो अति अधम तासु यह अपयस, जननी जग नसमाते।।
गुरु पितु अरु तुम पद प्रताप से,मोर सिद्ध सब काजा ।।

जो यह अनुचित जानत तो कस,जान देत महाराजा ॥
ताते अब नहिं कछु शंका करु, मंगल करु महतारी।
रंचक नहि निशंक कौशिक सँग,जात लखन सहकारी॥
सुनत पुत्र के बचन कौशिल्या, धरि धीरज उर भारी।

श्री माता जी बचन

बोली बचन सूँघि सुत कौसिर, जैसी खुसी तिहारी॥
अस कहि मंगल द्रव्य सजी सब, दधि दुर्वा धरि थारी।
गौरि गनेश पुजाय पुत्र कर, मंगल बचन उचारी॥
रक्षहिं रंगनाथ सब थल मँह सहित विरंचि पुरारी।
सकल देव दाहिने दशोंदिशि, रहैं शोक भय हारी॥
रंगनाथ को हौं सुत सौंपति, इष्ट देव भगवाना।
मों गरीबनी के दोउ बालक रक्षहु कृपा निधाना॥

दो०—जाहु द्वौ सुन्दर कुँवर, बढ़हु सुवल अँग अंग।
जय बिभूति मंगल कुशल,नितनव मग मुनि संग॥

छन्द-जननी पद प्रनाम करि हर्षित, चले संग दोउ भाई।
महाराज को करि प्रनाम सब, सभा सहित सिर नाई॥
गुरु बशिष्ठ को पद बन्दन करि,सब बृन्दन शिर नाई।
कौशिक संग गवन कानन कंह, मष राखन दोउ भाई॥

दो०—बैठै एक तरु तर मुनिबर, गोद लषन अरु रामै।
बार बार सिर सूँघि सराहत,पूरन मो मन कामैं॥
राम लखन लै मुनि चले, धन्य जन्म निम मानि।
शीतल मंद समीर तहँ बहन लग्यो सुख खानि॥

छन्द-विश्वामित्र चरण वन्दे पुनि, राम लखन दोउ भाई ।।
लिये उठाय अंक महँ मुनिवर, मनहुँ महानिधि पाई ।।
बैठे एक तरु तर मुनिवर लै गोद लखन अरु रामैं ।
बार बार शिर सूँघि सराहत, पूरन मो मन कामैं ।।
लहि मुनि मंजुल रस, सुख भूले सब ज्ञान ।
लिये लाय उर लालन लखि मुख कुम्हलान ।।
परसि कपोल सुबोलन कहिहै प्रान ।
लेहु लखन सह रघुबर विद्या ज्ञान ।।
सवैया-तातसुकेत सुता यह है,तुम नारीविचारिकदार्पिनछाड़ो
हाथी हजारन को बल धारति,माया पसारति ताहि बिगाड़ो।
याही हते मुनि होहि सुखी, रस राम मणी जग में जसमाड़ो।
श्रीरघुबीर महाँ रन धीर, तड़ाक दै ताडुकै तीर ते ताड़ो।
दो०-सुनि रघुनन्दन नाय शिर, गुरू अज्ञा शिर धारि ।
मारि ताडुकहि तहँ बसे,करि सुर मुनि सिरधारि।।
कौशिक प्रीति प्रतीति प्रमाना।अस्त्र सुसस्त्र दिये मति वाना।।
दो०-इतने में सन्ध्या भई, अस्ता चल गे भान ।
राम लखन सो कहत भे कौशिक मुनि हर्षान ।।
सवैया-पायेमहाश्रम राजकिशोर इतै यह ताडुका केरणमाही।
ह्वैहै पिरात सुपंकज पानी प्रस्वेद के विन्दु शरीर सोहाही ।
श्री रघुराज सुनौ रघुराज बिचारि कह्यो नहिं बातवृथाही।
आज निवास करो रजनी इत,कालिह चले मम आश्रमकाही।
आश्रम लाइ सुपूजा कीन्हा।फल फूल मुनि मुदित सोदीन्हा ।।

मुनि जी का यज्ञ प्रारम्भ

दो०-बोले मधुर उदार कर जोरि, बचन दोउ भाय ।
काज किंकर के करन हित, कहिये श्रीमुनिराय।।
जानन चाहे नाथ हम, रजनीचर जेहि काल ।
विघ्न करन हेतु आये, प्रेरित काल कराल ।।
रहैं सजग तौने समय नहि भ्रम होइ मुनीश ।
हमको समय बताय के, सुचित भजौ जगदीश ।।
समर उमंग भरे सुनत राम लखन के वैन ।
सिगरे मुनि बोलत भये तिनहि सराहि सुचैन ।।
सुंदर साँवर राजकिशोर भली बात कहिमनभाई।
हो समरथ सबै विधिते,दशरथ के लाड़िले आनंददाई।।
कौशिकदीक्षालई मख की,भये मौन वेदविधिजैहैनशाई।
आजुते अरु षट वासर लौ,रघुराज रक्षण कीजे बनाई।।
स०-हे मुनिनायक यज्ञ करो, जेहि कारन लैआये मोहि माँगी।
मैं रखवारो खड़ों मख को,करिये सुख से सवहि भयत्यागी।।
जो कोई आवै यज्ञ विनासन, मारौ ताहि बचै नहिं भागी।
श्रीरघुराज खड़े दोउ भ्रात, रखावहिं गे दिनरातहि जागी।।
दो०-सुनत मुनिन वाणी विमल,यशी अवधिपति लाल।
संयुग कसे कमर कठिन, करन समर तत्काल ।।
राम लषन षट निशिदिवस, नींद भूख अरु प्यास।
तके तमकि समर सजे, मख रक्षण के आस ।।
होम करन लागे मुनि झारी। आप रहे मख की रखवारी ।।

पंच दिवस जब बीतत भयऊ। पूर्णाहुति छठवाँ दिन भयऊ।।
दो०-श्रुवा कुशा अरु चरु युत कुसुमहु समिध समेत।
विश्वामित्रहिहवन में प्रज्वलित धूमको केत ।।
ज्वालमाल लखि वेदिका मुनि सब अशुभविचार।
कौशिक ते बोलत भये गुनि आगम निशचार ।।
सुनि मारीच निसाचर कोही। लै सहाय धावा मुनि द्रोही ।।
सवैया-पूरन आहुति को समय भयो भे मुनि वृन्द त्रासी।
श्री रघुराज कह्यो लषणै लाल दोउ विलोकि निवासी।
जानिपरै हमहीं हठि आजु निशाचर सैनआवनिखासी।
कवित्त-बिनु फर वान मारि फैकौंशत जोजन पै,
देखतहि आजु नीच सुन्दर सुकुमार को।
जारि दैहौं तूल कैं समान हे महान जान,
मारि अग्निबाण उपसुन्द के कुमार को।
अभय होइ यज्ञ अब कीजिये मुनीस मनि,
मारिहैं लखन खल वाहिनी अपार को ।
मैं हूँ आजु देखिहौ दुखद दुख चारिन को,
कैसे सठ करिहै दुखद दुराचार को ।।
यज्ञारम्भ कराय कृपाला। रक्षण हित सह लक्षिमन लाला।।
मारीचहि बिन फरशर मारी। दियो उड़ाय समुद्रहि पारी।।
दो०-बहुरि सुबाहुहि जारि दिये,अग्नि बाण रघुराय।
शेष हने लक्षमण शरहि,निशिचरअधम निकाय।।
मारि असुर द्विज निर्भयकारी।अस्तुति करहिं देवमुनिझारी।।

दो०-राम वाहु पूजे मुनिन, स्तुत करत तहाँही।
यथा सुरासुर रण जितै सुर पूजे हरि काही ॥

सवैया-कौशिकको लखि श्रीरघुनन्दनधाये गिरेपदपंकजमाही।
जोरि कै पङ्कज पानि सुखी मुख मंजुलवाणी कहिमुनिपाही।
श्री रघुराज सुनों ऋषि राजन मोर हैं जोर निहोरहु नाहीं।
केवल रावरे की कृपा पायो जीत्यो क्षनमेंरनमें रिपु काहीं।
सहज स्वभाउ सहज दोउभाई। कौशिक लिये अंक बैठाई ॥
पीठ सूँघ फेरत ततु पानि पढ़त राम रक्षा मुनि राई।
कोशिक यज्ञ पूर्ण करि लखि दश दिशि निरवाध।
राम लखन को बोलि कै, बोले बुद्धि अगाघ ॥

सवैया-कीन्होयथारथ मोहि कृतारथ हैनअकारथ कर्मतिहारो
स्वारथ सत्य कियोपितु वैन तथा परमारथ पूरो हमारो।
सत्य भयो अब सिद्धि को आश्रमछाय रह्यो यशविश्वमेंसारो
श्री रघुराज सुनो रघुराज अहै तुम हाथ राज दुलारो।

। श्री मुनीजी से रामजी का वार्तालाप मिथिलाजी का।

अबजो अनुसासन करहुँ मुनीशा।सो करिहौनिशंकधरिशीशा॥
शासन होइ अवधपुर जाऊँ। मातु पिता कहँ सुखी बनाऊँ॥
अथवा चलौं संग जहँ जाहीं। तुम संग सुपास मुनि पाही॥
सुनि विनीत मंजुल प्रभु बानी।कौशिकभन्योत्रिकालविज्ञानी॥
तहाँ कछुकाल रहे रघुनाथा। देखा पत्र गुरुवर के हाथा॥
सीता चित्र समेत सुहावाँ। पूछे प्रभु मुनि कहि समुझावा॥
स०-रामलला मिथिलामहँ श्रीमिथिला पति कैपनयज्ञरचाई।

भंग करै धनु ताहि बरै, तनया सुनि भूप जुरे समुदाई ।।
सो अवलोकन हेतु हमै रसरंग मणी, पठये बुलवाई ।
तातेचलो तुमहू मम संग, चरित्र विचित्रविलोकियजाई।।
सीता सोभन ब्याह उत्सव सभा सम्भार सम्भावना ।
तत कार्य समग्र ब्यग्र मिथिलावासी जन शोभना ।।
राज पुरोहितादि सुहृदा मंत्री महामंत्रदा ।
नाना देश समागता नृणगण पुंज परा सर्वदा ।।

दो०–दियो शम्भु को सोहहीं, सभा मध्य को दण्ड ।
मानो शेष अशेष धर, घरन हार वर वण्ड ।।
परमानंद की बात यह, कहौ विंप्र करि नेह ।
कौन हेत मख भूमि में राख्यो धनुष विदेह ।।

सवैया-पाई है कुमारी एक भूमि ते जनक राय,
ताके ब्याह हेत नृप यह पन ठानो है ।
तोरिहैं जो शिव धनु अतिहि कठोर घोर,
पइहै कुँवरि सो पत्र पठायो है ।
सेना सजि सजि कै नरेश देश देशन के,
आये है जनकपुर मोहू को बुलायो है ।
चलिये कृपाल पन पालिये विदेह जू को,
द्विज प्रतिविम्ब यह आपहि कोबुलायोहै।।

दो०-प्रण मिथिला धिपहै कियो, जो धुन देइ चढ़ाय ।
तौन जानकी नाम की सुता लेइ घर जाय ।।
राज तनै चलि कीजिये, जनक विथा सब दूरि ।

पूरि सुयश जग दीजिये, सुजन सजीवनि भूरि ।।
अनुगामी मै नाथ है । सुयश तिहारो हाथ ।।
कौन देर है दास को, वेगि चलो मुनि नाथ ।।
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा।हरषि चले मुनिवर के साथा।।
आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं।।

(अहिल्या उद्धार)

दो०—वेद पढ़ै न विप्रवर नहि होम धूप लखात ।
रहित सुखमा देखियत नहिं कोइ आवत जात ।।
सबै तरु विंन वेलि सूखे लखे खग नहि साथ ।
कौन बन भय दान कहिये, शिला कैसी नाथ ।।
यह तपो थल राम ! गौतम को सुनौ यह गाथ ।
तासु पतिनी भइ छल वस रमी सुरपति साथ ।।
शाप दीन्ह मुनीस यह भई पाथर नारी ।
चहती पद रज रावरी शिर परसि दीजै तारी ।।
छन्द—याहि शिला माहि है अहिल्या तिय गौतम की,
निसि अहर जोवै राह आपकी प्यारे जू ।
राम पद रजते तरेगी मुनीस हाँक,
कीजै कृपा दीजै रज अवध दुलारे जू ।
पैहै पति दैहैं तुमैं ब्राह्मणी अशीश तुमैं,
फुलिहै तुरतहि रसिक रिझवारे जू ।
यामै कछु सोचिय विचारिये न रंच
आप कीजै मति देर श्रुति मत वारे जू ।

छन्द—परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंजसही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइकर जोरि रही।
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आइब बचनकही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगलनयन जल धारबही।।
आजु यह कुटीं भई परम पवित्र नाथ,
पद रज पाइ महा पातक ते छूटी मैं ।
फल यह परम दिव्य भये अब भोग,
भोगजोग प्रभुहि कृपा ते मुनीस पद जूटी मैं।।
जैसे सुख दीन्हों त्योंही पैहो मिथिला में जाई,
सुखद असीस मेरी विप्र कीव धूटी मैं ।
महाँश्रम पाइ शम्भु लूटी जौन सुषमा को,
सोइ सुखमा को आजु सहजहीं में लूटी मैं ।।
सगर के वंश भूप भागीरथ ल्याई गंग,
आई शंभु जटा सिर सर से निकलि के ।
आह्लादिनी पावनी और नलिनी से तीन धारा पूरब गयीहै।
सोतोयों सचेत्यो सिन्धु पश्चिम गई है चलि,
भगीरथ सात पीढ़ी बीते तारि पित्रन को ।
आपहूँ को होइहैं मनोरथ सुफल राम,
चलिये नहाइये कछु भारी पुण्य करिके ।।
चले राम लछिमन मुनि संगा । गये जहाँ जग पावनि गंगा।।
गाधि तनय सब कथा सुनाई।जेहि प्रकार सुरसरि महिआई।।
तब प्रभु ऋषिन समेत नहाये। विविध दान महि देवन्ह पाये।।

हरषि चले मुनि वृन्द सहाया। वेगि विदेह नगर निअराया॥
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत विसेषी॥

(श्री जनकपुर प्रवेश)

देखत जनक नगर की शोभा, लोभा मन अविकारी।
भनत परस्पर बचन सकल, ऋषि नृपविदेह बहुबारी॥
कंचन कोट कंगूरे कलश गोपुर गुर्ज दुआरा।
अतिसुन्दर मन्दिर उतंगवर, कनक सुवनक के वारा॥

दो०-हाट वाट घर घाट के, सू छवि पर नव ठाट।
हाटक के फाटक लसत, मनहु तेज हवि वाट॥
राज तनै देखौ इतै, अति सुखमा सरसात।
जनक नगर धामन विपुल धवल ध्वजा फहरात॥
धाम धाम पै कलश ये लखि दृग अति सुखहोति।
जनु रवि धरि बहु रूप नित,नगर बढ़ावतिजोति॥

मुनिमंडली सहित रघुनंदन जनक नगरपंथ अभिलाषी।
विश्वामित्र महामुनि प्रमुदित चलत राम रुख राषी॥
आगे आगे चलत गाधि सुत पाछे राजकुमारा।
पहुचे जनक नगर उपवन में रहत बसंत बहारा॥
यज्ञ थल भूमि भलि जनकपुर राम लखन अस भाखो।
सुनहुँ महाँमुनि नाथ जनक नृप अतिसुन्दर करिराखा॥
बहु वासव विविध विभूति यह ऋद्धि सिद्ध समुदाई।
तापर पुनिमुनि होत स्वयंबर धनुष यज्ञ अद्भुतपरैलखाई

छ०-कहु धरणिपति सेना परी फहरात अनेक निशान है।

हय गय अनेकन बिबिध स्यंदन शिविर विशदवितानहैं।
नौवत झरत बहु नृपति डेरति दुन्दुभी धुनि ह्वै रही ।
कहुँ नाचत नट कहुँ बजत बाजत वारतिय गतिलैरही।।
जनक नगर महँ होत स्वयंबर धनुष यज्ञ संभारा ।
देखन को देशन देशन ते आये भूप हजारा ।।
महा भीर भूपति के पुर में लाखन विप्र जुहाने ।
चारिहुँ वरन अनेकन आये यज्ञ लखन ललचाने ।
चारिहुँ ओर जनकपुर के मुनि रहे जहाँ अमराई ।
उपवन वर वाटिका बजारन भरीं जनन समुदाई ।
दो०-अभिलाषन लाखन मनुज, अवलोकनि धनु यज्ञ ।
आये मिथिला नगर महँ अजहुँ तज्ञ कृतज्ञ ।।
यथा योग्य भूषन वसन, जनक कीन्ह सतकार ।
निमिकुल कमल पतंग को, छायो सुयश अपार ।।
यहि विधि भाषत मुनिन को कोउपुर वासीजाय।
जाहिर कियो विदेह को, गाधि सुवन इत आय ।।
पुर रम्यता राम जब देखी । हरषे अनुज समेत विसेषी ।।
वापीं कूप सरित सर नाना।सलिल सुधासम मनि सो पाना।।
गुंजत मंजुमत्त रस भृंगा । कूजत कल वहु वरन विहंगा ।।
वरन वरनीवकसे वन जाता।त्रिविध समीर सदा सुखदाता।।
दो०-सुमन वाटिका बागवन विपुल विहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँपास ।।
वनइन वरनत नगर निकाई।जहाँ जाइ मन तहँहँ लोभाई ।।

चारु बजारु विचित्रअँवारी।मनिमय विधि जनु स्वकरसँवारी
धनिक वनिक बर धनद समाना। बैठे सकल वस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गलीं सुहाई । संतत रहीं सुगंध सिचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरे । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू।विथकहि विविधविलोकिविलासू
होत चकितचित कोट विलोकी।सकलभुवन शोभाजनुरोकी॥
दो०–धवलधाम मनि पुरटपट सुघटित नाना भाँति ।
सिय निवास सुंदर सदन शोभा किमि कहि जाति ॥
सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा।भूप पीर नट मागध भाटा॥
बनी बिसाल बाजि गज साला।हय गय रथ संकुलसबकाला॥
सूर सचिव सेनप ब्रहुतेरेन। नृप गृह सरिस सदन सब केरे ॥
छन्द-ताते करहु निवास महामुनि जहाँ स्वच्छ थल होई ।
जलाशय होय विमल अति, सहसा जाय न कोई ॥
सुनि सुनि बचन पाय आनँद अति,चले पंथ तजि दूरी ।
देख यक थल सकल हर्ष भल, विमल जलाशय पूरी ॥
शीतल अमराई छवि छाई, मंजु विहंगन शोरा ।
अतिएकान्त जहँ होत शांतचित्त विगतमलिन सबठोरा॥
सुख उपजावनि मन भावनि अति, जनकपुरी छविछाई।
लखी आजु लों अस कवहुँ नहि, यथा विदेह बनाई ॥
सकल सुपास निवास योग बल,लखिमुनि लखन खरारी।
कीन्हे बास हुलास भरे सब, भयो नाश श्रम भारी ॥

(श्री मुनिजी को मिलने जनकजी जाते हैं)

दो०-विश्वामित्र मुनीश को सुनि आगम मिथिलेश ।।
शतानन्द को बोलि द्रुत, चले मिलन शुभवेष ।।
संग सचिव सुचि भुरि भट, भुसुर वर गुरु ग्यात ।
चलेमिलन मुनि नायकहि,मुदित राउ एहि भांत।।
सतानन्द आगे करि लिन्हों, द्विज मंडली सोहाई ।
पढ़तवेदवैदिक धरणीसुर,जय धुनि चहुँकितछाई।।
चलत पयादे मुनि दरसन हित,सबै सराहत लोगू ।
मिलनजातमनु ब्रह्मसतोगुण,करिविरागभवभोगू।।
आवत देखी भूप को कौशिक,द्वै मुनि तुरत पठाये।
तेनिमि कुल भूपति को करगहि,मुनिनायकढिगल्याये।।
विश्वामित्रहिं भूप विलोकत,कीन्हों दण्ड प्रणामा ।
कौशिकधाय उठाय लायउर,आशिषदियोललामा।।
दै आसन बैठाई भूप को अति सत्कारि मुनीशा ।
सादरकुशल प्रश्न पूछेउपुनि,मोदित अहहुमहीशा।।
तब करजोरि कह्यो मिथिलापति,कुशलकृपा तुमनाथा ।
कीन्हे पावन पुरी हमारी, अब मैं भयो सनाथा ।।
सैन सहोदर सचिव सहित प्रभु,सबबिधि कुशल हमारी।
सफलभयो मम धनुष यज्ञ अब, करी कृपा मुनि भारी।।
बोले विहँसि गाधिनंदन तब, रचना भली बनाई।
लखन स्वयंबर कसिकसिकम्मर,आयेनृपसमुदाई।।
महाभगवत हौ मिथिलापति,ज्ञानविज्ञान निधानू।

लखन स्वयंबर धनुषयज्ञ,युत हमहूँ कियो पयानू।।

दो०–गये हुते संध्या करन, पुरुष सिंह दोउ भाय।
आये सहज समाज मधि, जिमि उड़गन दिनराय ।।

(पद खेमटा)

मिथिला पुर आये मुनिराई।
सुनि मिथिलापति सकुलजाइ तहँ, बारबार बन्दे सिरनाई।।
ताही समय लखन फुलवाई गये हते, स लखन रघुराई।
आय गये तन गौर श्याम तहँ,कौशिक मुनि समीप सुखदाई।।
लोचन सुखद विश्वचित चोरन,वय किशोर अति सुन्दरताई।
उठी समाज राजसुत देखत, मुनिनिज निकट लियो बैठाई।।

-: सवैया :-

सुन्दर श्यामल गौर शरीर, विलोकत धीर रहे कस काकैं।
लोचन विश्व के चित्त केचोर,किशोर कुमार छयेसुखमाकैं।।
अपने आनन इन्दु छटानते, हारक भे सबके मनसाके।
श्री रघुराज कह्यो मुनिराज, अनोखे ललान केनाम पिताके।।
हैंधौं उभय मुनि के कुल पालक, कैधौं महिपति बालक दोई।
देखत रूप अनूप सुनौ मुनि, मेरी दशा हठि कै अस होई।।
भूलो विराग विज्ञान स्वरूप, इन्है लखि और दिखातनकोई।
ब्रह्म को आनंद वाद भयो, उपज्यो उर आनँद जोइन जोई।।

-: कवित्त :-

साके सुखमा के सू प्रेम मधु छाके
महामौद के पता के कोटि मैन मदना के है।

इन्है नैन ताके ब्रह्मानंद को न ताके,
मन मोमति चकोरी काके सम चन्द्रमा केहैं।
गेह ममता के बाँधे नेह बंधु ताके,
ब्रह्म जीव समता के रस राम मनसा के हैं ।
सिंधु से सुधा के हैं सिगार बसुधा के,
मुनिवर वाँके दोउ बेटा कहो काके हैं ।

दो०-कहत परस्पर पुर प्रजा, पेखत राज कुमार ।
इनहिं देखि आँखिन तरे, कोउ आवत सुकुमार।।
सुनि विदहे के बचन वर बोले मुनि मुसुकाय ।
जैसी कहि तुम सत्य सब, मृषा न नेक जनाय ।।
कहा पायो कौन को पठायो संग आये नाथ,
कैसे कै छोड़ाये भौन भले पित मात है।
कोमल कमलहूँ ते चरण बगायो वन कंकरकठिन,
काहे आप अब दाता हैं ।।
आपत सहत कुमर ए कुमार काहे,
अपनेही हाथ ते विरचे विधाता हैं ।
भनै रघुराज मुनिराज मोहि जान परै,
सुभग सहोदर कुमार दोउ भ्राता हैं ।।

कवित्त

साँची ही कही है तुम बचन अलीक नाहीं,
प्राणी है जहाँ लौं तिन सबके ये प्यारे है।
मेरे हित हेत चक्रवर्ति इन्हे दिये भेजि,

नाम राम लखन जगत उजियारे हैं।
ताड़ुका बिपिन माहि मारे दोउ ताड़ुका को,
अस्त्र शस्त्र रूप शील गुण के अगारे येहैं।
फेंकि के मरीचहि सुबाहु को दियो है जारि,
जानै हैं जहान मेरे मख रखवारे है ॥
धनुष यज्ञ देखन के हेतू। मम सँग आये कृपा निकेतू ॥
गोतम तिय मग माहि उधारी। गैपति लोक अनंद अपारी॥
सुनत राम यश तिरहुत राऊ। पगे प्रेम चित चौगुन चाऊ॥
दो०-धन्य धन्य मुनिवर सुकृत शिष्य अनूपम पाई।
तीन लोक सुख सम्पदा, अंशहुँ नहीं लखाई ॥

कवित्त

उक्त प्रतिबिम्ब सम लाये वर धन्य आप हैं,
ऐसा नहि अन्य जग देखे मुनिवर मैं।
सेवक अनन्य नाही संग में किशोरनि के,
भयेहै अपार श्रम आवत डगर मैं ॥
आपहुँ श्रमित अति भये हैं मुनीश राय,
गये कुमलाय प्रेम आतप कहर मैं।
सेइहैं सुसेवक हमारे सवै सर्व भाँति,
सेवा स्वीकार से कृतार्थ तब होऊँ मैं॥
दो०-जोरि पानि पंकज हरषि, कह्यो बहुरि मिथिलेश।
धन्य धन्य प्रभु गाधि सुत, सत्य धर्म तव वेश ॥

छन्द चौबोल

मोहि धन्य कीन्ह्यो धरनि, महँ धर्म धुरंधर नाथा ।
धनुष यज्ञ देखन मिस आये, सहित लखन रघुनाथा ।।
किये देश घर कुल मम, पावन कृपा कही नहि जाई ।
शतानन्द मुख सुनि सुनि रावरि, महिमा मुदित महाई।।
दो०-नाथ एक मोरी विनय, करन कृतारथ हेत ।
कृपा कोर लखिजनहिं प्रभु,चलिय पुरहिं सुखदेत।।
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू। चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ।।
सुन्दर सदन सुखद सब काला। तहाँ वासु लै दीन्ह भुआला।।
करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई।।
ठाढ़ भये जोरि युग हाथा । बोले बचन सुखद नर नाथा ।।
आयसु होय भवन कहँ जाऊँ। रहै कृपा मागे यह पाऊँ ।।
दो०-रिषय संग रघुवंस मनि, करि भोजनु विश्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवसु रहा भरि जामु ।।

—: सवैया :—

नाथ चहै लहु लाड़िले वंधु विलोकन कहँ नगर निमिराई ।
पै मम राउर सील संकोच भरो नहिं भाषत मोहिजनाई ।
दीजिये जो अनुसासन तौं रसरंग मणी, रुचि देउ पुराई ।
लाघव सो लखनै मिथिला, दिखराय लखैं पद पंकज आई ।
आनन्द कन्द लला रघुनन्दन, काह न राखहु नीति बड़ाई ।
जाहु सूसील मणी 'रसराम'सु वंधु सलोने को संग लेवाई ।
देखि पुरी नर नारिन नैन, निहाल करौ मुख चन्द्र देखाई ।

हालहिलाल मिलोमोहि आय रह्योनहि जाय तुम्हैंविलगाई।
दो०–सुनिमुनि बचन मुदित मन, पुरुष सिंह रघुबीर ।
धर्म धुरन्धर वंदि गुरु चले रुचिर रण धीर ॥
जाइ देखि आवहुँ नगर, सुख निधान दोउ भाइ ।
करहु सुफल सबके नयन, सुन्दर वदन देखाइ ॥
मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता।चले लोक लोचन सुखदाता॥
बालक वृन्द देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मन लोभा ॥
लखि दोउ बन्धु मनोहर जोरी।चतुर बाल बोले कर जोरी॥

—: सवैया :—

कौन महिप कौ हौ सुकुमार कहो केहि के संग आयेहो प्यारे।
कौन देश में नगर मनोहर नाम बतावहु क्या है तुम्हारे।
रावरे नाम अनूप लखे वसु नायक मो दृग होत सुखारे।
चाहो जो नाथ लखे मिथिलापुर तौ चलिय साथ हमारे।
दोहा-लखन राम हमारो नाम है, अवध हमारो ग्राम है।
जनक नगर देखन चहत, सुनु बालक सुख धाम ॥

-: सवैया :-

अवधपुरी सरयू तट ग्राम है लखन राम सुनाम कहाये।
श्री अवधेश के पुत्र दोउ मख हेतु पिता मुनि साथ पठाये ॥
काज मेरो मुनि से वसु नायक पाठ करौ विद्या चित चाये।
नेह बढ़्यो मिथिलापुर पेखन सिया स्वयंबर देखन आये ॥
गुरु जी की आज्ञा मानि आये हम दोउ भाई।
मिथिला की गलियो लखाओ मिल कर चलो भाई ॥

चलो देखाओ गली गली की अनुपम छटा अपार ।
रंग भूमि शोभा निरखन को चलो प्रियवर सुख सार ।।
विज्जू छटा घटा घन में, तिमि ऊँचि अटान चढ़ी पुर नारी ।
धाम को काम बिसारि सबै युग बन्धु बिलोकहिं होहिंसुखारी।
श्री रघुराज के आनन अंबुज, भे अली अंवक आसु निहारी ।।
पावै यथा सुर पादप को, एक वारहि भाग ते भूखे भिखारी ।
झाँके झुकी युवती ते झरोखन, झुण्डनि ते झरफै करतारी ।।
देखि मनोहर सुन्दर रूप अचंचल कीन्हे दृगंचल प्यारी ।
श्री रघुराज सखिन समाज में,लाज भो आज परै न निहारी।।
आपस में वरबैन भनै, सखि आजु लही फल आँखि हमारी ।
क्या सान चाल अजब अलबेले की गज लाजि रहे मस्ते मस्ते।
जिन देखे तिनके चित्त रतन अनमोल बिके सस्ते सस्ते ।।
रूप माधुरी बरसत है सखि जात चले रस्ते रस्ते ।
राम लला नृप नन्दन ने दिल छीन लिया हँसते-हँसते ।।
आये दोउ वीर गोरे सांवरे शरीर अली,
संग मुनि धीर विश्वामित्र निज लाये हैं ।
ताड़िका सुबाहु मारि मुनि मुख रक्षा कीनो,
मग मुनि तियातारि सुजस ले आये हैं ।।
सिव धनु तोरि सब नृपन को मोरि,
सिया जू को ब्याहे भला रेखा लिखवाये हैं।
पुनि हरषानी सब प्रीति अधिकानी उर,
अबही तै जात मान गीत लै बनाये हैं ।।

सांवरे कौशल्या सुन गोरे हैं सुमित्रा जू के,
कोशलेश के दुलारे मुनि संग आये हैं।
विप्र कौ बिघटन टारी निसाचर चमू मारि,
ताड़िका संघारी मुनि नारि सौ मिलाये हैं॥
चाप मख देखवै को आये अब बीर दोउ,
तिरहुति नाथ बड़े आदर सौ लाये हैं।
सुखमा निधान न समानता काउ तिहुँ लोक,
दीपन कै देशपति देखि कै लजाये हैं॥
जानकी के जोग हैली सांवरो कुमार हेरी,
इन्हैं छाड़ि सेष रहे पीछे पछितइवौ।
कैसे कहौं बीर सम्भु तीरासन बीच पर्‌यो,
धीर नृपन पछाड़ै प्रन वृथाई सुनाइवौ॥
संकर सहाई करैं चाप गरुताई हरैं,
ओर नरपाल तिन्हैं काल सौं दिखाइवौ।
सुकृत समटि सब ईस अरपन करे,
तब तौ अमित सुख आंखनि लखाइवौ॥
मेरी गली आये आली नृपति किशोर दोउ,
कहि कोउ मोसौं धाई के सही सवारती।
केसही ककही कही सुनीना ही दासी हूँकी,
सारी न संभारी रही औचक निहारती॥
झाँकत झरोखे देखि मोहनी ही मूरति कौ,
खोलि पट लाज रही तन धन बारती।

बिहसि चितई मोहि तब तन कंप भई,
अबलौं न छूटे मन भाँति बहु टारती ।।
जैसी तेरी सुता माई अंग–अंग छबि छाई,
यैसी तौ निकाई देव तिया मैं न देखिये ।
लोकन में ख्यात रमा उमा इन्द्रतिया तोउ,
याकी सुखमा की पा संग न लेखिये ।।
जौ पै कुल रूप गुण वैभव समान याकों,
मिले वर तब तौ सफल सब पेखिये ।
जो पै नृप त्यागे पन मन में विचार धरै,
बरै वहि सांवरे को समता विशेषिये ।।
जो पै समुझे समुझावो नरपालजू को,
समय सुपाई सब रीति दरसाइये ।
हेरे न सुता की ओर कीन्हे है कठोर पन,
हानि तौ दिखात कौन लाभ परसाइये ।।
अबही विचार करौ हाथ जोरि–जोरि कहौ,
देखि वर घर बड़े सुख सरसाइये ।
हठ कौन काज लाज कुल ब्यवहार ही की,
अजस न होय जो बिवेक बरसाइये ।।
पीछे–पीछे अंधियारी आगै हो छबि उजियारी,
रबि गति धारी पुर देखत फिरत है ।
जौ लौं अब लोकै तौलौं चेत न रहत लोग,
अन्तर परै तै नींद सी भरत है ।।

लोगन के लोचन सरोज बिगसत देखि,
ललना की लाज भाज चोर ज्यौं डरत है।
कुँवर सुजान कोसलेस महराज जू के,
जनक नगर बीच कौतुक करत है॥
देखे दीप सात के बसैया बसियाही पुर,
महिमा विदेह वंश लोकनि विकास हैं।
सुरासुर नाग मुनि आवत औ जात सबै,
हम तौ न देख्यौ ऐसौ रूप को निवास है॥
ताहु पै फिरै या लोक--लोक घर--घरहू के,
नारद सुजान जाकौ परदा न पास है।
ताहुँ ने कही मन मगन ह्वै के बार--बार,
आज लौं न देख्यो ऐसौ रूप को निवास है॥
माई री ये भाई दोउ रूप के है पारावार,
होत न सम्हार इन्हें देखि देह गेह की।
सील के समूह दोउ चातुरता भरे बैन,
कही कैसे जात ताके आपुस के नेह की॥
लोचन कौ पाये फल मिथिला के वासी सब,
उदयता भई कोउ सुकृत अछेह की।
एक अभिलाष होत जानकी कौं वरे याहि,
सांवरे कौ त्यागै पन मती जो विदेह की॥
जोइ गली पहुचै पुर देखन कुमार दोउ,
कौसल धनी के रूप रासि के निकेत से।

सुनत ही दौरी छोरे धाम काम लाज लोग,
परीख खरी मानो परम निधि लूटे से ॥
जाकी पद आंगुरीहुँ देख न पावै कोउ,
सोउ कुल तिया तजि लाज देखै हेत से ।
गोखन झरोखन के खोलि पट जाल दीने,
छाड़ि गुरजन संक लोचन छकेत से ॥
नीकै ही निरखु आली सांवरे के अंग सुठि,
निंदत मयंक मुख शोभा अधिकाई है ।
लोचन विशाल मानो कानन सौ मन्त्र करै
कान भुजा मेटै दोउ भुजा जान आई है ॥
कंबुसी सुढारग्रीव रूप सींव रेखा तीन,
बच्छस्तौ विशाल उच्च रूप की अथाई है ।
हेरनि हसन तैसी चलन में चातुरीहूँ,
मिथिला के लोग बस किये दोनौ भाई है ॥
सुपनै की बात तो सौं कहौं कै न कहै आजु,
घरी चार रात रही तब कछु देख्यौ है ।
लोग कहैं कहे तै झुठी न बात सुपनै की,
मेरी सुनि मिटै कहूँ बिधि अब रेख्यौ है ॥
तोरि ईस चाप दाप दलि दुष्ट नृपन कौ,
साँवरो कुँवर जय पाइकै बिसोख्यौ है ।
आय माल मेलि कण्ठ सियाजू नै जाय ढिग,
इतनै ही खुली नींद आती सो परेख्यौ है ।

आजु लौं न कही दिन भये सुन माई,
आई है बरात मानौ रघुकुल राई की।
जैसे गोरे सांवरे सुहावने कुमार दोउ,
तैसे नृप संग जोरी देखी दोउ भाई की॥
चारौं भाई याहीपुर ब्याहे बड़ौ मोद भयो,
इतने ही खुली नींद टेर सुनि माई की।
साँचौ होत सुपन प्रभात कौ या सुनी हम,
ईस नीको करै जो पै टरै पूजा पाई की॥
मोरे रूप वारे दोउ कुंवर निहारे माई,
रंग कैसो चसमा चढ्यो है मेरे नैन मै।
घर गली घाट बाट बाटिका विलोकवै कौ,
जाँउ तहाँ देखो गौर स्याम रस चैन मै॥
भूख प्यास भूली फिरौ फूली रूप रंग छाकी,
सखी कछु कहै सो सुनून वैन सैन मै।
कभी नीकी बाते कहौ कभौ बोली बावरी सी,
करि उपचार कछु होउँ लाज बैन मै॥
कही तै लगेगी खोरै जो है मानौ माई,
खोर मैं लख्यौ सो खोर वारो नैन छायो है।
सांवरो सलोनौ अलबेलो अवधेश लाल,
काक पच्छ वारो मेरे हिय मै समायो है॥
दूसरों न होय अब वेई मेरे प्राण नाथ,
गहैं वेई हाथ बिधिहु मै सो लिखायो है।

चातक जो चखै वारि प्रिय मीन वारि छोड़ि,
टरै कैसे मेरो हठ और को पठाये है ।।
नवल किशोर दोउ गोरे श्याम अंग वारे,
सुषमा सुधा स्वे विधि वरन विशेष की ।
आय मन सबही के आँखिन मैं छाई रहै,
नैन ज्यौं चकोर चित चातक तो पेख की ।।
आपनी हौं कहौ तौ सो जब तैं निहारे नैन,
बावरे से बैन मुख भूख प्यास लेष की ।
ब्याहै जो विदेहपुर विधि के विधान भले,
नाहि तो सनेह बेलि पावस परेख की ।।
बैठी ही अटारी लै पिटारी नव भूषन की,
पूषन प्रकाशत हों होत न प्रवेश है ।
करलै मुकर वार भौर कौ सुधारो जौ लौ,
अनोखी सुगंध के समूह धाये वेस है ।
तब तौ वियारी इतनै ही छाई उजियारी,
भानु सो प्रकाश पै न आसपता लेस है ।।
मन न समाय तब झाँकी हौ झरोखे जाय,
देखे दोउ भाय दृग छाय भूली हेस है ।
दौरि–दौरि दामिनी सो भामिनी अटारी चढ़ै,
वे तौ आये देखवे कौ सोउ भये पेखने ।
राघव कुमार अंग सुषमा अपार बारे,
देखि–देखि भये सब प्रेम के परेखने ।।

पय पान वारे-वारे मातु न निहारे ताहि,
तिनही बिसारे आप धाये अवसेषने।
नगर बिदेह मैं विसेष ही विदेह भयौ,
जोगी मुनि सिद्धता के साधु केसे देखने॥
कुँवर सलौनै दोउ कोउ महिपाल जू के,
देखन पधारे पुर स्याम गोरे गात हैं।
घर गली चौहट में वगर बजारहु में,
बाल वृद्ध युवा मुख उनही की बात है॥
देखते तौ छाके छबि बावरे से डोलत हैं,
जानै नही देखे तेउ छके से लखात हैं।
मै हूँ देखि आई ताव चढ़ी है खुमारी यैसी,
तू तौ जिन देखिये जो चाहै निज बात है॥
देखन नगर जब नृपति कुमार आये,
धाये तजि धाम काम वाम तजि लाज को।
जैसे कि तैसे उठि दौरी नव नागरि सब,
छाड़ि चली सबै आष आपनै समाज को॥
कोउ तो सिंगारे कोउ विनही सिंगार की ह्वै,
कोउ पद पानि कटि कटि सिर साज को।
वसन कसन भूली नीवी कर गहै कोऊ,
छाई झरोखे अटा देखन रघुराज को॥
नरन मैं नरपाल सुकृत समूरे कोउ,
होत अंग रूरे सद गहै सुभाय कै।

नरपाल कोटि तै अमर सतगुन रूप,
अमर मैं इन्द्र रूपवंत सरसाय कै ।।
इन्द्रहू तै अधिक सुजानियै मदन हीं कौं,
मदन तै कोंटि गुन विष्णु अधिकाय कै ।
विष्णु हूतै कोटि गुन रूरे रघुराज सुत,
ताकी पटतर हेली को कहै बजाय कै ।।
रानी जू सुनैना कूख होती जो न बेटी यैसी,
रूप की सुकेतु हेतु वैभव विशेष की ।
कापै प्रन ठानते भूपाल मनि महराज,
ठानै बिना पन भीर कैसे देश-देश की ।।
जुटे बिना भीर कैसे आवते किशोर दोउ,
श्याम गोरे अंग-अंग सुषमा सुवेष की ।
आवते किशोर जो न लोचन फल पावते,
मिथिला के लोग सब भये हैं सुदेश की ।।
आली बन माली रूप साली रघुलाल जू को,
मुख चंद चन्द्रमा के समजिन लेखिये ।
इनको नगर नदी सरजू सुहावनी है,
बदन प्रछाले तहां सोई अंस पेखिये ।।
सरिधव अंस ताको बहत विशेष लद्यौ,
संचि राख्यौ सोई सुर मथ्यौ तब देखिये ।
मही घृत न्याय तब प्रगटो है इन्दु भोरी,
तातै मुखचंद सम कैसे अब रेखिये ।।

अंग ओपवारो नव अंबुद सो कारो माई,
प्राणहू तौ प्यारौ लगै सहज सुभाय तैं।
काक पच्छ सो है दृग खंजन विमोहै रेख,
अंजन की डोरे लाल जीवन जमाय तैं॥
सुषमा को सीवाँ अंग लाजत अनंग देखि,
हेरनि हसनि किधौं काम की कमायतैं।
मोह नीसी डारी बस कीनी पुर नारी सब,
कौशल कुमार हमैं जानत निहायतैं॥
अमृत असेष इन्दु मोर दोनौ ओर चोकी,
भुजग चोरताहू पै अरगई रहत है।
बिबही पै बेठ्यो कवि फविजोत भारी है,
ऊपरतै सुबा एक गहन चहत है॥
इन्दु मध्य कंज दो हैं तापै अलि आली जुग
उदै बीच येक गुरू जोती को बहत है।
रूप रस रंग पगी मिथिला की बाला सब,
सांवरे को देखि-देखि बातें यो कहत है॥
दोउ हैं कमल तापै इम अभिराम दोउ,
इम पै दो कदली हैं कदली पै केहरी।
केहरी पै कंबु एक तापर मयंक पूर,
बीच हिमयंक विस्व सुधा वरसे हरी॥
तापर इक सोहि सुकताके मुख मोती है,
सुक के समीप दोउ कंज दर से हरी।

कंज ही पै चाँपसर दोय तमतोम आगै,
भानु कौ प्रकाश सखी राघौ सर सेहरी।
बार-बार अंचल पसारि विधि जाच्यो तोही,
सिया कौ सुजान वर सोभलो मिलाइये ॥
चाप गरुताई नवा मति मिथिलेशजू की,
हरौपन छाड़ै सम जोरी चित चाइये।
सबही कौ संमत जे मिथिला के निवासी है,
वाल वृद्ध जुवा नर नारी ललचाइये ॥
सिया सी न तिया जग पुरुष रघुलाल सौं,
विरचि जस लीनौ सो अवना नसाइये।
लोकन की सुषमा विरंचि नै वटोरी सब,
सोधि सार काढि ताकै ओर तो बहाइ है ॥
तातै भयो पंच सर सार को सुधारयो फिर,
ताहु कौ सुसार निज चातुरी मिलाइ है।
यही बिधि गौर श्याम मूरति रची है पचि,
लोगन कौ बुद्धि की विचित्रता दिखाइ है ॥
सिया की समानता विचारि विश्व पिता याते,
समे जानि मिथिला को अवस पठाई है ॥
विधु प्रतिमास-मास पूरन प्रकाश निज,
संपति कौ गौन समै छारत बिचारी है।
निज सम सांवरे कौ वदन सुमित्र मानि,
धीर धरिजात योंह मनै निरधारी है ॥

सम गुन बारेन सौं प्रीति सब करै कोई,
रीत ऐसी लोकन में प्रगट प्रचारी है।
याते अलि कोशल कुमार मुख कला कोटि,
इंदु सम राजै नीकै नैनन निहारी है।।
चन्द्रमनि चन्द्र देखि द्रवे भानु देखि भानु,
स्वाति ही के बुंद मुख चातक समाये हैं।
रवि ही को भानु मिलि कंज कोष खुलै जैसे,
चंद ही निहारि कै चकोर दृग छाये हैं।।
आपनी ही मनि कौ विलोकि नागराज जियै,
ससिही को मान जैसे कुमुद उनाये हैं।
तैसे हीं जनकपुर वासी नर नारिन के,
नैन रघुलाल मुख चंद ही लुभाये है।।
अति ही अनूप रूप भूप सुत मुनि संग,
देखिके विदेह मति रूप राग फँसी है।
विरति ज्ञान भये ज्यौं सूर के प्रकाश चंद,
भक्ति महारानी या चरित्र देखि हँसी है।।
ऐसी उर श्याम गोरे मूरति विशेष भाँति,
विस्मय विचारैं मिले एकहून दरसी है।
ज्ञानी मुनि ज्ञानी कही करौ चित चेत नृप,
मूरति मनोहर या शंभु उर बसी है।।
जीजी जो कहै न कहूँ-कहूँ बात सुपनै की,
करैं ईस साँची जो असीस गुरुजन की।

कहै क्यों न वीर पीर मोदमन आपनै कों,
हौं तो तेरो चाहौं सुख जाने इस मन की।
भवन भवानी कै हौं पूजिबे कौं गई तहाँ,
भूप सुत देख दोउ छटा छाई तन की।
इतने ही जागी मति पागी अति सांवरे सौ,
चिंता जिन करे वीर साची है सुपन की।।
देखत नगर भूप भवन डगर आये,
कोसल कुमार सुकुमार दोउ भाइ हैं।
सुन दौरी देखवै कौं आतुर ह्वै रानी सब,
चातुरता खानी लखे सुखमा उदार हैं।।
प्रीति उर छाई तैसी वरने कौ आई विधि,
नैननि को रसना को कियो न प्रचार है।
मन अभिलाखै सब प्रीति जुत भाखे लखि,
सियाजू की ओर सखी समता विचार है।।
बोली एक रानी प्रीति सानी मृदुवानी मुख,
सांवरो कुमार माइ सियाजू के जोग है।
रुप अधिकाये समतायो वय सीलहूँ मै,
मेरो मन भायौ सोई कहे सब लोग है।।
कही तुम सांच ये पै चाप वडोई कठोर,
सांवरो कुमार सुकुमारता कौ योग है।
तिरहुत के नाथ पन छोड़ै न बनै ऐसी,
त्यौंही सुन सवै हीये भयौ अति सोग है।।

तब इक चतुरि बोली चिंता जिन करौजू,
सियाजू के भाग कहूँ भूप बेचि खायो है।
जोई विधि सिया कौ सुधारी श्रमभारी कर,
सोई विधि सांवरो कुँवर रचि लायौ है ।।
देव गति काहू पै न जानी जात मेरी वीर,
कहाधौ दिखावै कहा करै मनभायो है।
कहा मुनि कुँभज जो सिंधु को अपार वारि,
गंडुकही धारि तेसै पेट में पचायो है ।।
कोई कही मटकाई कै नैन, चढ़ाइकै भोह सुशीश डोलाई।
तू न सुनीरी प्रभाव कुमार को,भाषति हौं जोयै हौं सुनिआई।।
पेई अवै गये गौतम की, कुटि सो इन के पग की रजपाई।
'रघुराज' भयो बड़ काज अबै, अहिल्यहिं पाहनते प्रगटाई ।।
सुनि रुचि वानी सनमानी महरानी सब,
सिय सकुचानी पद नख महि रेखती।
अरजम कौ अरजी कंज गरजी लिखत,
मरजी के हेतु ऐसी सोभा उनमेंखती ।।
करुना उर छाई सब शंकर निहोरती,
वेर-वेर सिया मुख पंकज को देखती।
आगै-आगै जाई जस राघव सुजन दोउ,
दौर दौर दूसरे अटापै जाइ पेखती ।।
चलै अति मंद गति पगे प्रेम प्रमदा के,
राघव सुजान नव छवि सौ छकाये है।

देव दिनकर का मनावै जिन अस्त होहुं,
रूप जाल सबहीके नैन उरझाये है ।।
नेक दूर होत मनों खैंचत से लेत दृग,
नैनन के वोट होत विरह धरधाये है ।
कहूँ तो चकोर चंद कहूँ दिन अस्त कंज,
कहूँ अरुन उदय ज्यौ कंज उनभाये है ।।
कोई कह्यो धरो धीरज धाम में,राम हमैं सुख वोरिहै बोरिहैं।
सोमिथिला धिप को प्रण वन्धन,वीर विशेषि के छोरिहै छोरिहैं।
'रघुराज' समाज के मध्य सबै, महीपन को मद मोरिहैं-मोरिहैं।
श्याम महाअभिराम विना श्रम,शम्भु सरासन तोरिहैं-तोरिहैं।।
मनि गत फनी जैसे नृपविन अनी जैसे,
पानी गये मोती को विवरन बखानिये ।
कुमुद गन रैन गये दिन गये कंज बन,
पावस के गये बन वेलि यौ प्रमानिये ।।
नेह बिन दीप जैसे मोती बीन सीप जैसे,
ज्योति गति तारा ज्यौं विभात होत आनिये ।
ऐसे रघुलाल अब नगर निहारि गये,
बाल वृद्ध जुवतिन की भई गत जानिये ।।
दो०–नहि संशय कछु कीजिये, हठि करिहै विधिनाह ।
मिथिलापुर वासिन हमै, होई अवशि उछाह ।।
सुनि सिगरी ताके बचन, बोली एकहि वार ।
होइ ऐसही सत्य सब, यहि करही करतार ।।

मैंथिल सखा राजकुमको धनुमख शाल को ले चले।
पुरपुर व दिसि गे दोउ भाई, जहा धनुष मखभ्रमि नाई।

निभिवंस भूप के कुमार हैं अपार संग,
कोउ कहैं चलो रंगभूमि चलि देखिये।
शोभा सुविशाल नाना रंग मणिजाल,
रचि खचित विचित्र खंभ चित्र अब रेखिये॥
कोशल कुमार कही चलिकै दिखाइये तौ,
कहि चलो चले मिलि मोद ही बिसेखिया।
छिनही मिलाप मानौ बड़ौ नेह नात हित,
विधि गति होनहार प्रथम परेखिये॥

दो०—हियँ हरषहि वरषहि सुमन, सुमुखि सुलोचनि वृन्द।
जाहि जहाँ जहँ बन्धु दोऊ, तहँ तहँ परमानंद॥

देखि रंगभूमि रंग छायो उर राघव के,
लाघव लिपटि नैन रचना विशेष की।
ज्योति पुंज खंभन मै रमा रचि कोरि-कोरि,
चहूँ ओर वैठीं मानो रमा उमा पेस की॥
कंचन मैं भूमि भाँति रंग के विभाग चित्र,
मित्र कोटि दिपै धुति चित्र के दिनेश की।
तनै हैं वितान जहाँ तहाँ तासवाद लेके,
झालर की झलाझल ज्योति है सुवेस की॥
कृत्तिममणि कोर कोर वाटिका बनाये है,
विधि हू लखि भूले सुधि आपने शरीर की।

नकल नरेशन की बनी देश देशन की,
चेतनना लगी तामै सूत्र के समीर की ।।
जाही की है ताकी मति भूलै लखि वाबरी सी,
नगर नदी समेत रचना जो तीर की ।
तैसे गज घोरे रथ पालकी सवारी सब,
ठाड़ी चहूँ ओर भीर कृतम ही वीर की ।
रचो है समाज सुर सुँदरी को कृत्रम ही,
अंधर अकाश बीच कौतुक सो पेखिये ।
अपसरा नाचै करै गान मान तान तोरि,
मोरि अंग भाव रंग रास रसे लेखिये ।।
काली हूँ कपाली कोट सिंध चढ़ि देखत ही होये,
भय जौलौं कछु मरम विसेखिये ।
रचैना विशेष सब कुँवर सनेह भरे,
गहि-गहि हाथ कहै राघव या देखिये ।।
कहूँ कृत मोरनटैं टैं गति सांवले की,
कहूं करैं केलि हंस हंसनी अपार हैं ।
वारिभास कुँडन में कंज वृन्द मोर जुत,
भूले लखिमौ,बिरंचि सोचेई विचार है ।।
कहूँ सुक बृन्द उड़ै नाना रंग अंगवारे,
कहूं चक चातक चकोर कौ निहार है ।
मेवन बनाय द्रुम तोरि के खवाय कहै,
चाखिये सुजान कौन स्वाद याको सार है ।।

धनुशाल की शोभा वर्णन

छप्पय–

या विधि रचना ललित बनी चहुँ केर निहारी।
मगन भये दोउ बन्धु अवध आनन्द विहारी॥
पुनि मंडप मधि भाग चले देखन अति प्रीती।
देखि सवन कौ होत हों न गति होत प्रतीती॥
देख्यो शंकर चाप अति कठिन गरु व गंभीर।
मंच बने चहुँ ओर वर बैठे जहँ मुनि धीर॥
महल बने चहुँ फेर ज्योति मनि मोति विराजे।
गोक झरोखे जाल विविध रँगनि छवि साजे॥
कलस कंगूरे कलित बने खग अवनि विभो हैं।
कनक दंड कर लियै द्वार प्रति हारक जो हैं॥
ठगे जात सुर असुर नर लखि कौतुक परकास।
देखि रघुलाल मन बिसमय विविध विलास॥
रंग–रंग के वसन भाँति चामी कलातारी।
देसन नकल नरेश सुरेश भवन करतारी॥
ताके बने वितान छत्र छवि छाजत नीकी।
विस्तर नर्म विशेष प्रांत रचना जुत नीकी।
तिरहुति पालक कुँवर सब रचना रंग दिखाई।
पुन इक मंदिर लै गये मग भूल दोउ भाई॥

दो० हँसै परस्पर नृप कुँवर, भवन भवन प्रति द्वार।
तुम्ह कहँ दरसत नहि चतुर कीधौं कौन विचार॥